# THE INSTITUTE FOR ADVANCED STUDIES OF WORLD RELIGIONS

## FILM—STRIP NO.
## MBB—1971—41—44

# BUDDHIST SANSKRIT MANUSCRIPTS

IASWR

MICROFILM PROJECT MBB

MBB-1971-41
1. Film strip number

14
2. Source

SRĪCATUHPĪTHA MAHĀTANTRARĀJA
3. Title

CATUHPĪTHA

4. Additional titles, shortened forms of title, etc.

N.S. + 880 = A.D.
5. Year in which MS was copied (Nepali Samvat and Christian Era)

×
6. Name of Scribe

NEPĀLĪ PAPER
7. Material (Palm leaf, etc.)

NEVĀRĪ
8. Script

14 cm. x 23 cm.
9. Size

23
10. Lines to a page

62
11. Number of leaves in complete work

×
12. Missing leaves

×
13. Author and Date of composition (if given)

16
14. Number of Chapters

15. Remarks

This text is very important to understand the Yoga (joining stage of Prajñā and upāya) which is divided into four stages as Ātmapītha Parapīth, Yogapītha and Guhyapītha.

August 28, 1971
Date photographed.

विगीनाथ[illegible]न[illegible]भिवर्य॥
ॐ नमः श्रीवज्रसत्वाय॥ ।एवं[illegible]सर्व[illegible]र्षि[illegible] स्वच्छ॥
[illegible]वामिकवस्तन[illegible]गिनजालसम्भव॥ [illegible]शाली[illegible] मरु[illegible]
[illegible] मनु[illegible]स्व [illegible] ममा[illegible] [illegible]श्रीन[illegible]यागी[illegible]
वज्रपाणिनवधा[illegible]लिनमना[illegible]॥ सम[illegible]न[illegible]लिंग वज्रपाणि[illegible]
[illegible]नाम[illegible]दक्षिण[illegible] सम्युत पृथिव्यां प्राणि[illegible]
[illegible]न[illegible]वचन॥ [illegible]मिक्रामि[illegible]मन्द्र[illegible]प्राग
[illegible]ना॥ [illegible] [illegible]नाम[illegible]थर वग॥ [illegible]नापानसर्वा सा
[illegible]ना॥ [illegible]मणम[illegible]श्री[illegible]न[illegible]
नो[illegible]श्री[illegible]या॥ [illegible]द[illegible]दयाना[illegible] [illegible]श्री[illegible]वग॥ [illegible]न
[illegible]नदवस[illegible]पन[illegible]ज॥ [illegible]वा[illegible]ना[illegible]प[illegible]पापावस
[illegible]पावन[illegible]॥ [illegible]सर्व[illegible]दर्श[illegible]नि[illegible]जिनन॥ [illegible]
[illegible]विभजपश्चनिम[illegible]ध[illegible]प्रति[illegible]जाय[illegible]त्रय[illegible]
[illegible]॥ [illegible]निम[illegible]लक्षिण॥ [illegible]सत्ता[illegible]
[illegible]॥ [illegible]सुवन[illegible]दर्श[illegible]पाप[illegible]
[illegible]कानां[illegible]दश[illegible]दन॥ [illegible]पापा[illegible]नय[illegible]वाद[illegible]
[illegible]॥ नाहि[illegible]ना[illegible]हि[illegible]नाम[illegible]॥ [illegible]नम[illegible]
[illegible]भिनि[illegible]व[illegible]कथा॥ [illegible]नकामाना[illegible]दश[illegible]वन[illegible]॥ [illegible]
[illegible]स्थान[illegible]ना[illegible]र्वादि[illegible]जन[illegible]॥ नाहि[illegible]सकाजा[illegible]
[illegible]श्रीभिन[illegible]कथा॥ [illegible]न्य[illegible]त्री[illegible]विद[illegible]॥ [illegible]प्रय
निस्यानां प्रीति[illegible]वा[illegible]सर्व[illegible]विशय॥ नाहि[illegible]दिय[illegible]गि[illegible]
[illegible]॥ नाहि[illegible]दान[illegible]प्राणि[illegible]सर्वनिवा[illegible]॥ नाहि[illegible]नमग[illegible]
क्रियानि[illegible]नागम॥ नाहि[illegible]क्षनमि[illegible]हि[illegible]॥ [illegible]
हि[illegible]ज[illegible]यानि सर्वंचि नाहि[illegible]॥ [illegible]विवा[illegible]पेदर [illegible]कर्म
[illegible] ॥ [illegible]नाहि[illegible]भि[illegible]न[illegible]यन॥ नाहि[illegible]

दा पक्षा जाग श्रा सूक्ष्म डापवरविकीर्तिश ॥ सत्पुशील तपश्चिना सुष्ठु प्रियमा
पून निस्पृह ॥ सूक्ष्म सानि न निःस्पृ सुधियानप्रियानम ॥ निःसुरु आध्या हं का
पापकारी दुःखास दश ॥ सुरि चापन पातान सुजितश्रा विविधगता ॥ वर्ण मी
तिचर्या वि सूक्ष्म नाऊ सुकीर्तिश ॥ निरामय पापगत सूक्ष्म विविधा आर्य आगतु
मगत ॥ दगमयू सुख दशना सुस्पतावि निलागम ॥ मलिनि क्लेश धर्म दानश्च ज्ञ
नसम निर्व श्रेष ॥ सूड आतुन मातुन स उत्पत्ति दिवाभ्यसगा ॥ सुवर्णम न दा
जाना ना श्रवण पाणि श्री यागी ॥ दविड़ धर्म सार्वीय सुमवादी प्रियवदवा ॥
सूक्ष्म रिश्म नादद चिया वा ज्ञा तुनाम्यकन ॥ सर्वशील मला लिप्त सुजान प्रीति
निःस्पृह ॥ सत्तु सूक्ष्म शीलगतु दश्यते गमा ॥ पसमद मक्षा जाम
वीर्यवान् नमन भक्षन ॥ भवश्रा सुवर्ण श्रे मधुर्य पग गीतश्मा न सन ॥ बाधक
सुनु सर्वपा दिगव मायून मान ॥ वक्षिशासि मलस सुरिय साविं सुवर्ण
यस ॥ शील सुमन रवन ताश्रीन कर्मसूनान क्षश ॥ मस्तु गश्रु समर स्पुगश्च
पवावि घर्याचक्ष ॥ सुसीना सबका जागनि स्पृहा व सुमन सदिश ॥ सलीलाया
सुपात्र विद्युरा यश्च जन प्रियय ॥ स्मृतिज्ञा क्षेमा शिरुग्रस्म सं भन सुर्वम
यक्ता ॥ सुमाप शिश्राया ॥ सुष्ठु श्रेष्ठ उत्तु निस्पृहश ॥ दश पामी दिक्षा सम आ
धि सुष्ठु मयक्षम ॥ पर्व मी निमायन स धर्म सू समश ॥ सम सन्त्र क्ष
जामायन निर्वच यश ॥ दुध्य मान शील सम्पन्न वि नपा चार व लिंग ॥
गुणवान् रूपसम्पन्न श्री लक्षश्च पशावला ॥ सर्वमि सुमन्ता शिह्न भक्दप
सिप्रनामन ॥ सरी दानि मवि गानी पाशि वैन्य स्थितिका ॥ प्रीति नाश्र
निसर्व पा यश मन स्वक्षन पश ॥ पवधिवर मसारिम श्रूप वा प्रशिक्षितश्च
श ॥ मिक्षि व दाक्ष जाज धर्म सुसन्तवाद ॥ नीमिश्रा स्वस्त्र समान वि मा
विविधा शिल सर्वश ॥ धार्य मग मत्स्य नाना श्रृहिता धरणा नन्द ॥ शूल सूर्पन्य
सूपास्त्र नमः सर्व सकार्यन ॥ मशि धज नाथ दाना सम्पूर्ना त्वन मशयश ॥

मूर्त्तिमायमूर्त्तसत्वात्मा श्रेष्ठसुकृतिरूपात्मा॥ रुद्रिकदान कीकाम जागह सुः
प्रिमामवा॥ पिताया हृन्मार्यधर्माशि उत्तुस्य सुगृहस्थाथा॥ सुनाम्भृमस्व रूपा
त्तुपा पक्कर्मादि मूर्त्तंवश॥ स्वपञ्चि ज्ञानिक्रमों धिसीर्यवान्नव मत्कृष्ट॥ भगानि
वक्षस्य स्वभावात्स्वरूपस्य मूलकथा॥ स्वजनप्रीतिसर्वंस्व हीनदीना नरूक
म्मक्कशास्या मूर्त्ती दाव कीजाग मूरतपीमूलबद्धिमान॥ सूनृतकाउत्तमसूत्रा
णीपूर्वामिपाशिनिस्कक्षश्च स्वजनप्रीतिसीतापरीत दीनानन्दसम्पदश्च॥ मू
भयसूर्यवागस्तु सूरियधर्मरागदिव्या॥ कनकाधादहकाव भजापी रुप
यानकाद्री धीरूपितनमाना मायूसदानिरिहत्था॥ वशिजनउत्कदसुसे
मस्मूल्गनहरुकृष्णा॥ यामान जानि विमानि गर्भिणन उत्कानिना॥ सूया ना
दावकाजागमूर्यवीव पवाजमय॥ स्वकमसूर्वशक्त॥ सूनालन उत्पावध वा
ना॥ दधिवानि सम्हातानायापव धिक्तुजसवक्ष॥ सिंहता वन मस्त न पक्ष्म
त्तुपसर्व विरा॥ निधर्जं सर्वकातपूर्हा गना स्तुनिस्ससक्ष॥ सर्वकनउत्त
क्वचसिद्धियाला॥ जमपउज्जरिमि॥ वर्षपञ्च भजमायूज्यामूर्गसर्वकस्मा॥
भक्काश्रमसम्भसामस्त्याप्यनिनसं भयभाकासुवावनकाजानवर्षषष्ठ
निजी वजि॥ धनवानी ममाकमस्तापीउसपाहुपप॥ सरसवादीउत्थ
मेहसर्वसत्वाहिनकाव॥ विपयवान्द्रियवामेछ सर्वशास्त्रविभायदा॥
श्रीरामसुर्वंसतमयालोचित्कसुकर्शीयप॥ सदस्मसूसानानामिसूर
यास्यं नसंशयथ॥ वाहिपादव जास्कपामीहिमा सुभेवान्यमा॥ रुद्ध क्रोहन
मानव मुपरं य नूज्ञाधका॥ कूर्मादिनायपवत्वाजामकवं सक्साथातयं॥
मत्तुनां पापसंचितिपमिकिवभपूतानायकं॥ रुद्रिकामिद्विमाथामि स्याद्
लानिद्रिवनथा॥ स्वभवपनिना नाकामानागीगपाठका॥ वाहि नाथानि
कर्मादिवपप्रष्टिकलथा॥ मक्कवं वसमाधानि रुद्रजानामाक्रिवावका॥ उ
नासमाहिता॥ येवकर्मं लज्जिनकर्मनि॥ विद्धधावस्तु रुद्राश्चादलीजो

मध्यं कृतं ॥ सिद्धिदं मंगलि वरानां शुभं मंगसी गजायनं ॥ दर्शादि सादि संक्रांत
ए वांकन गतिनु धश्च ॥ हिताशुभं दाना नाशद्धि दंषीर्दुग तुर्जीन ॥ माहिना
शुभं संयास्य नपर्वे विहग वाधनं ॥ [illegible] मगहेना नस्तु स्त्रियाद्दिश्व समागमं ॥
तृ मत दवजागस्य मत्र नापिक्तु दृश्यांगि ॥ विवाहे वर्मभाग स्य शुभं विपाप्यान
सिध्यंति ॥ मकल [illegible] नस्य शुभकसा वानि वर्हणं ॥ नक्षत्र त्रिषु कार्यो भो
मगं श्वापि नमे नंति ॥ सिद्धिं नवनिजना नानि दश्यन शुभं समस्तुनां ॥ हरिश
गशुक्र कर्मादी विवरस्वापि नसार्वदा ॥ आमावीध मनविधयागानि हुतं स्नानशा
प्यनं ॥ स्व मस्तु समस्तु वंगश वनि सारिगच्छणं ॥ काम शुभं गणा [illegible] मगन
स्नानि वियस्तृणं ॥ वासकी पादिनाक्षेत्र साहिनान [illegible] लक्ष्या ॥ कर्मा टर्नु
मस्कानं पमस्तु वयस्तुथा ॥ मताय पादिकमस्य संवन मनस्य [illegible] पा ॥
मदासं स्थादि वस्तु सा सिद्धिं वनलिंषु दनतं ॥ गणश्री धर्मणवजं [illegible] लु
मास्तु लीमनं ॥ कर्तालास्व मसंस्कान कालाजश्र तुस्का सिद्धा ॥ शुभं विक
ममा भागमि मयनस्तुहाप यत्र ॥ सिद्धिं वयारि वस्तानां शुभं गया गजा
यनं ॥ शुभ स्यजस्तु विम सायश्च मत्सु ना तु समागमं ॥ शुभं मघा विधि संपाक
विधि सहाव यापनश्च ॥ जमन जमशकर्म यथास्यालकुमडितं ॥ पौरस्ता
दिक्रम सादि शुभं तुथानंतु दक्षवश्च ॥ दशाद्वित्रय वस्तावि द्विनानि घटि
कैव ध्रुवं ॥ दशाहस्य वषष्ठानां रजनी घटिमाव शुभं ॥ यथादिनादिनस्य
वागलिम नस्मन्विनं ॥ द्वितीय नतु कासस्य मन्तु मासस्य जनाकिनां ॥ दश
द्वित्र नंपक्षस्य दिनादि घटिमं द्विनं ॥ दशाद्वित्रय शुभ स्यादिना स्यांघटि
वंगता ॥ दशाद्वित्रयद्व कस्य रजनी घटिकं वध्रुश्च ॥ विरमव्ये दयं शुभं कप
टि विंशप्रकल्पिश्च ॥ दशत्रिरिर्द्विका शुभं दिना स्वा घटिरंगता ॥ दशाद्वि
गुगय शुभस्य रजनी मस्य शुभं कृतं ॥ दशर्षित्रिवि शुभं कस्य स्वा वंग समनिव
दशाद्वित्र नषष्ठस्य रजना घटि संकलितं ॥ दशत्रि [illegible] षष्ठस्य दिना स्या

दिनहानिना ॥ दशधिष्ठ्य यथक्रान कृत्स्न मध्ये कीर्तितं ॥ दक्षिणायन सप्ता
[illegible]कालस्य लक्षणं ॥ दशधिष्ठ्य [illegible] दिन[illegible] [illegible] ॥ दशाहि
[illegible] सप्त सकृत्जीमध [illegible] ॥ दशधिष्ठ्य [illegible] दिनाते [illegible]
भा ॥ दशधिष्ठ्य [illegible] ॥ [illegible] दि
दिनं [illegible] दशधिष्ठ्य [illegible] ॥ दशधिष्ठ्य [illegible] दि
नासी दिन [illegible] ॥ दशधिष्ठ्य [illegible] ॥ दशधिष्ठ्य [illegible]
[illegible] ॥ दशधिष्ठ्य [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] भा [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] मासानां [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] यदि
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] यावाम
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

कर्णा॥ सस्थूचिक्षानिश्लुङ्कसत्तरिवीजनरञ्जितं॥ ॥स्पृपेवनक्षा
वक्षा॥ श्रामलाङ्गुद्वयंशङ्खलिखलानलसस्थेथ॥ नवक्षाम्बन्दितागस्मद्वद्व
द्यारिमष्टिगवंगृतिखमध्येसनाम वीजवस्तनादिस्तथा॥ प्रणयासवप
र्वसप्रवंसिनन्क्षायाञ्जनं॥ अप्रगनेत्रुसवीजस्य पश्चरवृद्यारिमष्टिगं॥ प्रम
पृष्ठंवश्रनासस्वरस्तुङ्गुंवनिवक्षेथ॥ खवक्षाद्विदशवीजस्यवञ्जीरुवणीमा
मवनं॥ पश्चरसप्तुक्षवीजस्यखगमारुतिस्थुगिमा॥ दष्टुलाक्षश्रवणनापक्षा
नवञ्जपाणिना॥ अङ्गमध्यस्वरघण्टाभेयथ्यशिरसिस्थिता॥ मध्यासक्षालिन
पुर्वर्ध्वेसमायमाचक्षा॥ खवीन्दिसम्यक्षाक्षाप्यदगायजिनिवक्षिथा॥ उरु
नधायनामानांवीजमस्येवयाजितं॥ वंमालीपश्चिमायस्तुनसवीजस्तु
याजितं॥ वक्षालीदक्षिणस्थानवीजपूर्वंशरक्रिवृप्रा॥ गुह्येभानासिधिनीचे
व ग्रामेयम्याप्रक्षतथा॥ नेत्रुम्याजम्बूदीस्थानवायमातयिकेदाने॥
वीजक्षानगुक्षान्तावत्मवीघहिवक्षाय॥ ग्रथास्तुसवींसानागमावी॥
जस्तुविन्यसेत॥ ऊर्ध्वदादशस्थानस्य स्वप वीजसक्षापयेत॥ दशमा
रुगश्रनासहिसंयुसकस्थपयेत॥ दीपिनी ह्रषिनीनामकवांश्री ता
किनीमथा॥ यपास्थानमस्यानमप्रगमारुगश्रुगिमा॥ सथताकिनि
स्थानञ्जरूपदीपिनिस्तथा॥ पश्चिमहृषिनी आकां कं वाजीदक्षिणा
न्यसेत॥ मध्येनामतुसतिरवयथानिस्रस्तुऊर्ध्वसंाद्वयसप्तदक्षावा
नक्षासप्तमयसेयत॥ समनासमस्थानेषुपक्षायन्दनातिपक्षा॥ पिवि
मपूर्वधुपनगन्धनाथानक्षावतिशामध्यसत्काप्यतादिनिधिष्ठितं॥ श्री
सवज्रीकयोगसवज्रसत्वमहायशा॥ वज्रहलकवायुवज्रचिनिन
मस्तकात॥ मध्यचक्रेसवीजस्यअयक्तसगमनम॥ पूर्वजमींदिपापस
दवेगादीकुवसयेत॥ पीतासर्वत्रमजेषनेयाक्षातिकमस्पृक्षा॥ निर
जसर्वथायेषमानपार्श्वयोर्याजितं॥ श्रीयूधवरसन्दलानांपञ्चमा सां:

सुधिक्ष्व रवयम्॥ स्राप्यकामनम्स्व नस्मिन्नियप्रक्षालिंगमसं॥ जरि बंगिण
माथ सविज्ञानक्स सुरुजन॥ ॥ सूपर्वे स्वासमास्लेन प्रविष्ट्या गत्र
कायम्॥ समस्तासनाकासनन सर्वसिध्यन्त कांक्षयं॥ दायिनदायियक्षानं
याम वामनन सूक्ष्मिमान्॥ नस्य स्थानतुवाक्यानां सर्वसिद्धिप्रदायकं॥ विव
गोस्वासंवाहना सिद्धिस्तननसंशयः॥ दक्षकादिविषध्वंसविषयागस्य का
पयम्॥ कालेन सर्वकार्येषु पूजितं सर्व कीर्तिनं॥ प्राणे यदि स्थानं कार्यसि
द्धिस्तननसंशयः॥ दक्षकादिविषध्वंसचिकित्सां गजकाय यत्॥ पूर्वलक्ष
णया गात्रोनु सूक्ष्मनागसर्वविषम्॥ सत्तुर्याग॥ दिव्यस्य समसूनीय न
संशयः॥ चिकित्सासून सर्वेषु विषसंहननयत्नपः॥ न्यस सूक्ष्म नविन्यस
दद्दद्दस्य सर्वविषम्॥ सूक्ष्म जपसमन्यस्य सूक्ष्मं जं सूक्ष्मापयम्॥ सिनव
दुस संचिन्त्य ह्रूं सजविषमनशः॥ मध्यमस्य तस्थानपिज्ञानयिज्ञानस्य
स्थितं॥ सूजं चकिंगमाथ गपश्चावाक्यतु काय यम्॥ गणाधिमस्थकपूर्वी
श्रीविपत्तुविमिश्रितं॥ मध्यस्तुयमसम्बिस्य चन्द्रमस्तु लमस्थितं॥ चिन
यच्छत्र गकिन्यां ध्वंसनस्थारिमस्थितं॥ द्विभुजसन्नपर्यङ्के सर्वास्वरा
स्वधितं॥ खड्गयागपात्रामाशूलमावस्त्र लुपनं॥ सूक्ष्म नागस्य शीर्ष
समाक्रम्यपमनमासनं॥ पूर्ववासुकिसंस्थिरस्तु उरूत्र गजोपसभा॥ प
श्चिमे कर्कोटनागेन्द्र दक्षिणे पद्मसङ्गथा॥ महापद्मस्तु उत्तरे भान्मा सूक्ष्म
य शंखपालवम्॥ नैऋत्य प्राङ्कुलि भनामा च वायव्यां स्तु तक्षकन्तु॥ चिन्मय
दद्दनागस्य शिरमाक्रम्य सूआसनं॥ पूजयत्सर्वं वसनिपूर्ण धूपवलि
स्यम्॥ सूक्ष्म दद्दस्य वज्रस्य वज्रताकिनीचिन यम्॥ मयूरश्रुत्तु पिच्छस
मांक्रम्य संप्रयागवम्॥ सर्वाकर्षण पादस्य पादानामस्तृतीयम्॥ ॐ
ह्रीं ठठत्तु ह्रूं ह्रूं स्वाहा॥ वज्रसरित्या गेन तु नास बाधिकानयम्॥
ॐ वासुकी ह्री ठठत्तु स्वाहा॥ ॐ गन्धकाजी ठठत्तु स्वाहा॥ ॐ कर्कोटक

ह्रीं टट्ठ स्वाहा ॥ ॐ पद्म ह्रीं टट्ठ स्वाहा ॥ ॐ महापद्म ह्रीं टट्ठ स्वा
हा ॥ ॐ शंखपाल ह्रीं टट्ठ स्वाहा ॥ ॐ कुलिसमान ह्रीं टट्ठ स्वाहा
ॐ कुलुक ह्रीं टट्ठ स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं टट्ठ ब्रूं हुं हुं हः अमृतसनिर्विष
हर हूं स्वाहा ॥ ॥ श्रीकृष्णकीनमस्य गरुडकीनमस्य केनसाधनं ॥ सर्पप
श्लेगरुडमांसं चन्दनेन विभिन्नं ॥ गरुडस्य मन्त्र स्वार्थ्य गरुडसन्द दस्य
नस्य ॥ हृदयवालिनमाथ अधज्ञानलब्धिमध्याविनं ॥ ज्ञानभाविशमाप्रगस्य
स्वाविस्फलनहितेथ ॥ स्वास्वाविद्वनमाथ अशश्रासस्वासनपीडयद्य ॥ पन
मीडिनमाप्रथसेसपायादिकम्पयत ॥ कम्पिमसर्वमङ्गनशालगीनउका
नयद्य ॥ ह्रस्वानगीमिकाव्यपरस्वधउदकं ॥ कम्पिश्चद्रुगमावयमका
मस्वेवमावयत्र ॥ विषसंहार्यथागीनां सिद्धमनात्रसश्रययथामूरवणिनकच
ङ्कनां उर्द्धवीयवस्त्रनामृत्या ॥ हृदयात्वक्त्वानागस्यऋषयशाद्भयपादयोः ॥ अ
चिकित्सुदतुदस्युसहस्तुमम्रस्तुकथयम ॥ ॥ अनन्तमहाराजवर्षा
पनसमूहकम ॥ मनावमयद्देशेषसमीपजलपार्श्वमध्याविगानविगमाध्वे
वनानाक्षत्रघनाच्छिना ॥ पञ्चरवङ्गिकमूलेन वजकर्माधिक्याय ॥ च
तुमन्त्रमन्त्रदीवं नागमस्यकरपिनं ॥ शिवद्वयनघासस्यसूनाकालेषुव
स्थितं ॥ जयस्यपूर्वगश्रीनन्दउद्भयगत्र ॥ सविश्वश्रियपश्चागङ्गवधा
प्तदुदक्षिणे ॥ अङ्ग्रप्राकारनागस्यादिजेउद्भवतमयस्य ॥ वासुकीपूर्वस्का
नवगकद्रूमस्रूपगत्र ॥ पश्चिमकर्कोटनागस्यपद्मदक्षिणेभवपे ॥
महापद्मस्तस्त्रीभान्याऋतेनयत्रशंखपालवद्य ॥ नैऋत्यांकुलिसघालस्यः
वायव्ये उद्भवतुर्द्ध ॥ भवपद्मनमस्यागरजञ्चनदनश्रुकपिशं ॥ गर्जितं
पूर्वस्थितं घानश्रावर्णघनमवच ॥ चतुर्थं गहप्रभवाश्रमनसाजान मागम
॥ यथापूर्वादिसंख्यापादिशवर्णेनुध्यापरस्य ॥ मध्येतुवज्र आकिसाप
मासनमासिन ॥ खव्वाङ्गस्थानगपात्राक्षं सर्वारयंगतखिपिनं ॥ कालीनसिन

१८

वर्ल्कसमस्तलोकावस्त्रस्पर्शं ॥ सर्पाविष्टितपद्मस्य सर्पमासनयाजयत् ॥ उक्त

पर्पतुसूत्रानाकीनपात्रादिनस्पर्शं ॥ पुष्पधूपादिगन्धप्रदीपविविधमन्त्र

का ॥ ध्यागीलूनस्वमसंचिनात्स्नान अक्षिनीमास्तकेश ॥ ॐ कुंडुंवस्वाहा ॥ आय

स्तनमन्त्र ॥ ॐ वासुकीहूं स्वाहा ॥ ॐ अनन्तहूं स्वाहा ॥ ॐ कर्कोटकहूं स्वाहा ॥ ॐ

पद्महूं स्वाहा ॥ ॐ महापद्महूं स्वाहा ॥ ॐ शंखपालहूं स्वाहा ॥ ॐ कुलिकपाल हूं

स्वाहा ॥ ॐ हूं हूं तक्षकहूं स्वाहा ॥ अष्टौनागराजमन्त्र ॥ ॐ धिनिरवर्णाय हूं २

हा ३०३ स्वाहा ॥ अष्टौमपनाजमन्त्र ॥ पाठ्यावर्गनस्वाकृष्टदीमस्तुद

संयम ॥ अष्टौमपनाजानमुद्रा ॥ वामहस्तमुष्टिं दत्वाकृष्टुंकनिष्ठप्रसार्य

दक्षिणहस्तरुनाकाव नयाजयत् ॥ अष्टौनागराजसमुद्रा ॥ ॐ वज्रजाक्षि

निवर्ष हूं ३ स्वाहा ॥ मूलमन्त्र ॥ लक्ष्यत्रिकायजपस्पर्शं मवादिक्षायथत् ॥

शिवकमेस्य यागीनावर्णापनसमसुमं ॥ ॥ अपवेहनीनिमिरुव

च्यानुकमचपविनरुकानाधारवस्त्रादिहस्तुका ॥ पुनाशीतियागेपु

मूकोर्ध्वमादिकन्हिया ॥ नयामाक्रम्यवाश्रीपुचत्वाचचूनियागवत् ॥ यथा

हृनसमात्मानां पविकाद्वयकारणं ॥ यदिसागस्तुकाननमिद्धिहानिसद्य

सुधि ॥ ॥ हूर्मिनप्रकचलोहिनीयपटलेसमाप्तश ॥ ॥ रगर्वन

श्रोत्रभिक्षामियागानम्हनिषघणश ॥ कनहानयमनुषुकथयागारुधा

वयत् ॥ गुरुवज्रयथागन्धेदवगामास्मकेस्पर्शा ॥ प्रथमगुप्तसंविनाप्रः

कास्मनलक्ष्लिना ॥ रूपशून्यादिश्वस्यतावदस्ताद्संमनग ॥ चक्षुभास्वभि

शून्याना रूपनस्लेवकाव यत् ॥ घ्राणधास्वभिश्नानामधनस्लेवकावथ

ग ॥ मनधास्वभिशून्यानागन्धनस्लेवकावयत् ॥ जिह्वाधास्वभिशून्याना च

समनस्लेवकावयत् ॥ कायधास्वभिशून्यानां स्पर्शनस्लेवकावयत् ॥ मनधा

स्वभिशून्यानाधर्मनस्लेवकावयत् ॥ चक्षुश्रोत्राभिभिश्नसमध्वविक्षाकथं

संवृत् ॥ आत्मात्मनिभिश्नसम ध्वविक्षकथं संवृत् ॥ आत्मात्मनिभिश्नसं

समध्ये विन्दुकं परं स्मरेत् ॥ जिह्वामाक्रम्य शून्यस्य मध्ये विन्दुं परं स्मरेत् ॥ स
नादविद्वांस्त्यानां मनःस्थैर्यं विकल्पतः ॥ तृतीयं मनसाक्रम्य शून्यस्वर्गादि
चिन्तयेत् ॥ अथ्यं कृत्वा तु ज्ञात्वा तु मंत्री ध्यानान्तरक्रमं ॥ सर्वं शून्याविमानम्
उर्द्ध्वमध्ये तु निर्मलं ॥ अथ्यं तु पादिसन्धिर्वा दशादिलोकंध्या तु केशी का पः
भागूलसंयानां तावन्मनसमस्थिरं ॥ समना शून्यसं चिन्त्य योगी नाडुविच
कामं ॥ पञ्चगं शून्यमध्ये तु पारेकमनन्तकारणं ॥ दीपनं तु स्वरूपं गगनस्य
ज अनन्तं तु पोषितं ॥ सूर्यमण्डलमाहृत्य मृत्युंकारमादिसिद्धिदं ॥ हृत्स्थं मा
यनस्य महिमा सर्वकोटिरिं ॥ तावत्ताव्यायुव तेजस्य गगनं सोऽप्य्ज्ञानपानं
मिनवर्तकचन्द्रसूर्यसर्वगमध्यगं ॥ योगसिद्धिविज्ञानीया गणितं संस्था
न वृद्धिमान् ॥ पञ्चाग्योगसमस्तं शून्यनादादि रिचितं ना ॥ याहास्ताणु मनकाः
तावायनृकिशीघ्रलावना ॥ ज्ञानं नष्टं यामानास्य हृद्यानां गति धुन्का मा
मर्वपितम हृत्वा नाशानंदो ज्ञानक्रियाथ ॥ नाडुसानूचं न हत्वा तु स्वभिरनयूनं
न व ४ ॥ ॥ इति श्रीकृष्णार्जुनसंवादे योगशास्त्रे तृतीयपटलं समाप्तम् ॥ ॥
अथ ध्यानावयवर्जितं ॥ संसारार्णवधाराओं उद्धीरण ज
भागनलयध
लमतृकर्म ॥ मध्यवह्निमन्दहानाउर्ध्वं लक्षनमध्यगं ॥ लक्ष्मलक्ष्मणं लक्षणा ना
विज्ञाहानं न च न मा ॥ ज्ञानं न ज्ञापमाना तल्लक्ष्य यानां गतिं शून्यं स्मरेत् ॥ गति
शून्ये गगनस्य मध्ये विन्दुमातिगम्यतं ॥ एवं तु समाधिपाद स्थूलस्वरनाम
मंमार्च्छितं ॥ सहस्रकमलवायागी पूर्वजन्मगतिगतं ॥ समना शून्यं सधिर
लम पर्वलक्षं सकावतं ॥ अन्तःकायादि दहस्य वीजाथ्येयप्रवृद्धिमान्
यलेवमागजगहस्य मूर्ध्नि कादवादिस्थानं प्रकेव शत्रुमाना ॥ समा
धिनाश्रद्धलनयम्तिमामलेवरम्यादि समादिचिन्तन ॥ न्यासं कृत्वा
विन्यासं तु हृदमग्नि उक्लत्पयेत् ॥ पृथिवीहृदयवीजस्य चतुर्मसेवयाज
येत् ॥ वायुहृत्नादिवीजस्य नासकर्णादिचिन्तयेत् ॥ अग्ने नाभौ वह्निवीजस्य

जिह्वेन्द्रियप्रवृत्तये ॥ यस्य रूपं ज्ञानगम्यं च तत्स्थानप्रयाजिनां ॥ गीव
प्रभा हवीजस्य यारस्याज्ञा सूक्ष्मस्तथा ॥ चलितादुदरयद्दस्य पञ्चस्थानाद्गुरु
स्तथा ॥ कलमस्य भूजेन बीजस्य स्वर्गवाचिनं ॥ यकारद हस्य बीजस्य ज्ञानत
क्षिनीसा समे ॥ पद्मासनमासीनं सूर्यमण्डलमण्डितं ॥ स्वर्णच्छाया सिंहच
न्द्रकालिंगगपाकाचने ॥ त्रिमूर्ध्न पङ्कजं चैव सत्य पर्यङ्कवस्थितं ॥ कार्पिच्छ
रि उत्थाना पद्मा वक्ष वितर्कितं ॥ त्रिनयन समितं जीवं सुलोहवज्रलक्षणं ॥ अ
सितवत्सवस्त्राणां वामगर्जनि मवच ॥ शक्तिस्वर्णागरुत्थाना चित्र नृजादि
धर्मयश ॥ स्वनणापूर्वमधेश्वसमार्भजियगसय ॥ नसिंहबालामनकाद्य
शवयश्च सनिश्चर ॥ मनाङ्गनश्चविहानसर्पि कावस्तुचिन्तपर ॥ आः
लिङ्कालि प्रथा गोष्ठ नस्य बीजस्तदूर्ध्वगं ॥ अमाध्वबिन्दुनादस्य बीजरात्र
कुसुमानि ॥ अपकारबीजस्य पञ्चस्वधारि मण्डितं ॥ अनिलानलसुप
र्थवर्णो बीजन चादितं ॥ बिन्दुनादसमूहेनेन वावावर्ग पञ्चविंस्तनं ॥ यथा
अकार पूर्वसरूणअकारअग्निमा ॥ जपसमाविसम्पन्नेविनिलक्षानि
कारयश ॥ नसज्ञापि नयागीनां चिन्तनस्यैव सिध्यन ॥ अर्घोदर्माद्वित्र
वंस पूर्वसंवादिकारयश ॥ वज्रा कर्मसमावस्तु सिद्धगानाच संशयः ॥

॥ ॥ अथ वज्रयथागवं तन्त्रिकानाविशेषगणा वज्रवाक्यासपूर्वस
गर्वयर्वत्तमकार ॥ यथावर्गचतुर्थवर्ण पूर्वमकारगच्छकं ॥ द्वितीयं चन्द्र
स्थानं शुक्रावयवयाजिनं ॥ यथावर्गद्वितीयसद्वितीयवकारबिन्दुका ॥ अतू
र्जनसुपीतस्य चतुर्थस्य तृतीयकं ॥ द्वितीयं प्रथमस्य चार्यपञ्चमनत्तयाजि
नं ॥ प्रथमाकार पूर्वस घाव अकारअग्निमा ॥ अस्य बीजजपयागी सर्वव
स्तुनिष्ठ याति ॥ दाषांहस्तसमास्मिन्प्रभुजनाम्नैव याजकरा ॥ प्रमाणेश्चाध
मध्यमउत्तमस्य नस्ते नतु ॥ नरिकर्णविमूढस्य बालामातृकुचिनापत्र ॥
स्त्रियगसर्ववस्तूनि श्रद्धायीवादिवामन ॥ ॥ अथागमलक्षणं वक्ष्ये

सर्वकार्य्यजलास्त्रिका॥ यथावर्गसमुत्थानां स्वरितञ्च गृह्यता॥ यथावर्ग
स्मगीयस्य स्वरितञ्च भवेत॥ अकारन्तु यत्वं सद्योगीयत्नागवीजदेश॥ प
वर्मस्यतु पूर्वस्य स्वरस्य रेफेन तु पीत्यर्थम्॥ विसर्गं स्वञ्च मध्ये वकण्ठीबीजत्व
श्रिकां॥ स्वरसूक्ष्म पार्श्वेन घाग स्वरञ्च स्थितिका॥ अथवा पूर्वं याग यं
मन्त्रना बीजकीर्त्तिगं॥ हस्तयोः सूक्ष्म बोधिसत्त्वा स्वना मास्य नाग्निमेश॥ क्रोधेन
तु मम कम्प सूनामाद्वौ चसेध्यमा॥ कनिष्ठाया यागस्येव वज्रवामस्व मृदु
का॥ वज्रवामस्वमृदुस्य वर्जनामाल ममप्र॥ ज्वालनं दशदिग्गस्थाने भय
दवाविरूपा यग॥ वर्षलोकेन नका लयस्रसमृतन्तु याजयम्॥ लं कमम
जपयागीपूर्वसूवादिकायंयत्न॥ ॥ अग्निप्रज्वलत्तं सुसपीठममा
मश॥ ॥ हरगवज्रभ्रमत्सिद्धामि प्रतिभि स्वसकीर्द्दर्श॥ आग्नि हो
मक्रियानान्तु वलिपूजादिकं कथा॥ मन्त्र वज्रयथागत्वा विमादिग्रह च
मा॥ मन्त्रसूत्रादिहोमस्य जप ध्यानादि रावना॥ अग्निकर्मादि सर्वस्य जप
झास्यनि पूर्ण मानं॥ हस्तीक्रोधि वमातृ ग वर्णी लक्षण गतस्य वा॥ सूक्ष्म
लपूर्णं कवा यावत्सहस्रं रक्तिका॥ सूक्ष्ममेव यघाम समम पूक्षिकनमा
मादशपत्तं संयुक्ता चतुर्दर्शक॥ निभवच॥ भातत्रयत्रज्ञानास्य स्व
दृष्ट्यादिकायंयथम्॥ स्यादशमस्थानस्य लोमस्थादिरिव वच्छ॥ विषम
गृह्य वर्धनानन गत्या नातु आनिना॥ आज्ञानास्य स्वगायिन विधिवद्रागन्तु
खानिनं॥ खानिना सूक्ष्मरागेन उष्ठ नापि कूतुका॥ उष्ठस्य सूर्द्ध रागतु
मपीवा स्फुरत्का नयम्॥ नमि वस्त्रादिकं पूर्व पमपत्र समसूम॥ पम
स्येवत्तु वा स्फानां प्राकार मध्यम गिरि॥ सूक्ष्ममध्ये तु वज्राग्राप मस्थाप
विस्तापिना॥ स्ववर्णामरिचावन्तु सानि कालेन्तु घसूक्ष्म॥ पवि पूर्णस्तु व स
संयुक्त अथवा पूर्णिम वचा॥ अर्द्ध चन्द्रा विमस्वाद अश्वांशाकर्षणं लक्ष्मनं॥
जमन्त्रम नयाकार्यं भागि पूर्णिव आदिकं॥ पवर वज्रास्तुति काय यथादि

शदिगन्तम्भगू॥ चतुर्भुजान ष्टधा ष्टष्टकदविकानलं स्थितं॥ चतुर्वक्त्रसरो
हालांकास्यकास्यसृष्ट्यापन॥ पभाम्रामनरि स्कानके तागसृष्टिं गतरां॥ पो
वृथास्तृर्द्धसंयुक्तं सूक्ष्मं स्थावास्थानतु॥ दिलसूक्ष्म्यदिलानस क्रमदवा॥ दिख
पयगा॥ सृक्ष्मागस्य पागतादि वषगत धाजयग॥ ॐ किलि २ स्वाहा वगा
तीहूँ हूं॥ उयचारेव मन्त्र॥ साव पहान गद्दिना मांसदहनानि निर्मितं॥ कव
नेत्रकूटरन घ्नासस्थनसंवेवत॥ जिव्हाग्नि समपिदचेर आकासंक
र्णनामस्याथ॥ पृथिवीम्वमिदस्याक्ष अग्निब्रह्ममिदशाथ॥ मालाताव थिग्रीव
स्याचलिनाभद्दिस्सक्तिनथ॥ कमा उनस सर्वाना पशुत्र्यामालमतयाथ॥ कतन
स्यमस्थेन दवगासृसहायतं॥ त्रिपयकनमृक्षशसृस्ताज कलनास्यकं॥
निर्मितामालमदहनस्थानगद्दिनिमांसन्धेथ॥ सेनवर्णादिकृतुन्दसर्वार
वयरोषितं॥ द्विभुजं सर्वे पर्यङ्क सृजोराववक्त्रलषशु॥ समवक्त्रहलानाका
नामालासृमस्वगां॥ समोहितश्च सदहनगाव यत्स्वामिनिश्चतं॥ अथ लमि
शोधनंकार्य ॐ हूं। २ आधहूं हूं॥ मथहतप्रतापस्त वक्त्र रावन रुथा
ननरावनं॥ भूमिशोधनमूलमन्त्र॥ वीरहस्तो सम्पूर्णमसूत्रलाम ध्येमनकप्र
मायथत॥ स्फिता त्रकमलजा सर्वशोधनं॥ ॐ त्रि स्वाहा॥ घृतशोधनमन्त्र॥ ॐ सा
हा॥ उयप्रचक्रामन्त्र॥ ॐ त्रि स्वाहा॥ व्रीहिशोधनमन्त्र॥ ॐ यवरु स्वाहा॥ अभ्य
याहि शोधनमन्त्र॥ ॐ अः स्वाहा॥ समिधशोधनमन्त्र॥ अग्निमध्यापनमभि
ना अग्निध्ववपुजिविगं॥ वामहस्तमुष्टिद्धृत्वा मध्यमं काथमृक्तिंनं॥ मध्यमे
हस्तीयपवांयां॥ कांधा कापिणवृक्तिरितं॥ ॐ आगछ २ अग्नि जम्भस्वाहा॥ नावथ
अग्निमध्येतुपममासनभामिन॥ कपिताजटसंयुक्तं गोडव मर्गकारु
त्रिका॥ सृशोराववस्त्रसंयुक्तं अग्निजालसमप्रभं॥ पूजयसमचरवलनि
पथार्मशाधनरत्न॥ इस्यामित्रिलिश्च सर्वेषां अग्निमध्येतु जिजपा॥ वीरहस्तो
अस्ता लिंदवा पमाभावे वणविकाभयग्र॥ मध्येमृक्तिनसर्वेषां अग्नि दद

मसूद्रिका॥ ॐ ऊंऊर खस्वाहा॥ अग्निहृदय मुद्रामन्त्र॥ स्वस्थाग्निदा पयेत्न
पश्चाद्यालम्बलीयत॥ अथ स्नान मा चमन अग्निमध्ये निरार्धविश॥ ॐ हूं ट फि
रूहू॥ उदकेसर्षप पृथ्वीवापालो वस्त्रादि संहमेध॥ सिंचय मादि ग्रालाने य:
स्निमध्ये उनिक्षिपत॥ शोधनमुद्रामन्त्र॥ ॐ वज्रप्राकार हूं हूं॥ वामहस्त
पयासूरवसव्यहस्त अङ्गुलिसूरवश्च गान्धादि जामपत॥ प्राकारमुद्रामन्त्र॥ दी
हस्तप्रसार्य स्पर्शयेत॥ अग्रान्तु अन्यान्यवत॥ ॐ जांस्वाहा॥ महापद्मनमस्त्र
यामहस्तमूष्टि कृत्वा अङ्गुष्ठ प्रसार्यगीमगत॥ ॐ च स्वाहा॥ कीलनमुद्रामन्त्र॥
अग्निमध्ये पद्मसन्धिर नासर्पमण्डलमध्ये॥ स्वगठतार संछेनमध्ये
वज्रकुचिनायत॥ पञ्चरत्न आदिवस्त्राणां चतुरश्रादि ताकयत॥ लम्बि ज्वा
लमनकालसर्पमण्डलमध्ये च॥ वज्रेण रूपानि आधय अ॥ स्वस्वासननानि मि
गं॥ धर्मसवकतु वस्त्रेनादि उअं पागपीडका॥ स्वस्वाङ्ग मूल हस्तेन सर्वारु
वशतापिग॥ अथ अलमस्य अनास्थानक्याकिनिलीयत॥ पूजयेद्विविध
धस्तूनि अग्निमध्ये उविम्बयत॥ ॐ हूं हूं स्वाहा॥ आरुस्यामूलमन्त्र॥ दक्षिणं द
गुरुसस्विस्तपात्र वामनपाजयत॥ ॐ हूं स्वाहा॥ मूलमुद्रामन्त्र॥ ॐ वाञ्छगरुं
स्वाहा॥ ॐ पुष्पमाल हूं स्वाहा॥ ॐ गोह्रस्तीप हूं स्वाहा॥ ॐ धूपपथ्य वाहूं स्वाहा॥
ॐ हूं हूं र महाबलि हूं स्वाहा॥ सव्यहस्तप्रसार्य गन्धमुद्रा॥ अङ्गुष्ठकाध्य म
ऊंधत॥ पुष्पमुद्रा॥ अङ्गुष्ठमुष्टिक्रिणमीपमुद्रा॥ रयस्तामुद्राया मध्येमुष्टिक्रिण
धूपमुद्रा॥ कोलोको प्रसार्यमध्ये रयस्थचालयत॥ बलिमुद्रा॥ सदक्षीण्य स
दक्षीपञ्च अरुस्य सूरवजिकेषाधसपाधिकचरसंगस्म मध्ये मध्यमागुणिको
अरुस्या पूरुसमक्ते धपाकानगलवं॥ रूगपूर्णकोणिध्यानां ज्वाल देह स्व
लीयत॥ संपूर्णसर्वनारुस्या पूर्णमुद्रा उमध्ये मनका॥ पूर्ण सम्पूर्णताल्पु
न अग्निमध्ये उमा पेयत॥ स्वामलोचन अस्पष्ट आसदरूस्य लीयत॥ प
ध्याघ्र आल्पदेहनहावनं उपविचकेश॥ अग्निदेवस्य मध्ये उविनापादि

वङ्कशं॥ लोमक्ष्वरत्रिरियाहस्सा पूजामानि स्थापितं॥ मंगलागीभिकाका
—१मूडानस्यैवथाजयम्॥ अपचैवदृणकर्मवश्यमाधिगच्छेलधान्यादि
भिमलेपयतुसर्षपा॥ यवलतलकबीजस्तु पनकीवयमिश्रितं॥ मधुना जीव
पमलुश्चाहस्सां लाविसपण॥ पश्चरश्रीवस्यकाष्ठस्य स्वर्णदेशार्ण गुष्ठज्ञान
वण॥ सालिकंकालसंप्राप्त श्चाहस्साविधिर्मरूकम॥ मिलत हस्यादिमायस्य
वश्कसालियवादिना॥ नस्तु वृक्षमश्रीवस्य पूगस्यमधेयाजितं॥ पूगश्री
वस्यपयनश्चाहस्साचविशपण॥ पश्चरश्रीमाद्विकाष्ठस्य श्रानादत्तमस्त
था॥ अदिष्ठस्पृष्टिकंकर्म थागीनांचविशपणय॥ मिलनकस्य स्वस्त स्थ
प्रियंगुनागकेशरं॥ अहनीसनपुष्पकं मधुसर्पनयोजितं॥ देवदार
पटाचैववासकंनागकाष्ठकंधं॥ धादणेनतुज्ञान स्यवकर्मादिमरूकम
मिलस्याद्रदिमासांदानु रल्लागकालवीजका॥ वीक्ष्णमेलनश्चालाय रुधि
रंमिश्रितंमनथा॥ कालपकस्यहजस रल्लानगत भवचा॥ भूतप्रस्तुत थ८
ज्ञानस्यराहिचाथपिकीर्तितं॥ सर्षपमज्जमायस्य पथभूत्वीतुमिश्रितं॥
रुधिरंमीक्ष्णमेलन श्रावाथ्यनतकाभयान॥ काचनमातुकृकसवायसन
तुयाजितं॥ रूरुपारूत्वकर्मादिमस्वाटपथिकीर्तितं॥ मन्समांसादि उष्म
स्य कनिष्कंधसर्ववीहर्षधं॥ रुधिरामधुमाताम्य कालपर्णश्यजितं॥ गरु
डांकस्यकालदी उच्छ्रदृदनकाष्ठकंधं॥ नरिककर्मादियुक्तस्य स्वामिना
सर्वकार्य्यवत्॥ ॥ममम्पचरुत्तलकाश्यवश्यानं॥ दधिमधुपूर्णाका
नांश्रीपत्नास्यैवलाश्यन॥ समिधायाधिकृतस्य श्चाहस्सासनमष्टकं॥ मस्यन
(क्षानिमकन्तु प्रनिक्षासृसमाहितं॥ याजस्तम्भस्य वाजेन्द्रसीघ्रमन्धविरू
द्धंवं॥ घ्येनश्रीयाकामधश्चैव समिधंदललश्यनं॥ पश्चरश्मनारियाहस्सां
प्रियाशीघ्रनवशंतु॥ यायांविनायमिकार्य्य माना सर्वसिमिसिध्यति॥ ॥
भूथक्षिप्यादिसयहंवक्ष्यत॥ पचिपूर्णसर्वमगस्यविनिमासानचापिका

श्रीरिच मणिरिह धर्मसमयानमणिसप्त॥ मन्त्रगन्त्रप्रथागतं सर्वंशि
खादिकोत्तिका॥ श्रीरिच णयागधानंतु कुनपाशिन्नतसं॥ तत्र लोकोस
दानिसुदानादिरिचणिलु रे४॥ नतुकामभवगाचेव नतुशागनमाश्रिन
नत्वबाधामहकायंभूतीदायरूपामन४॥ निनन्दकसर्वसत्वप्र आचार्य्यतु
त्वदेवता॥ जल्पचिन्नाहूचात्मानपापवृद्धिकनिग्रसु४॥ सलिलापन लो
लापवर्जयदीक्षनतु॥ ॥४अगिपरपी० ग्रपसपरलाक्षसमाप
४॥ ॥श्रप्रकोत्तुह्यंदवजलहामादिकोदृ४॥ कथंलञ्जगह्वान
यंजलहामादिगस्वच॥ अथवज्रयथानन्तु सम्पल्लाकसजलादिकं॥ वि
गानाविगगाचेयनानावस्त्रपलम्बिका॥ समनगालिपागध्येनचतुरस्र
सुविलायं॥ मध्येतुजलराजादिसिगडध्यथलिपयथ्रा॥ उदकाकानिस
न्निसुं पवि घूर्लुंजललोहितं॥ कासासानाञ्जश्रष्टसश्रष्टसीसुतुल्ला
पयग॥ गन्धोदकन आहूर्य्यपल्लवनतुमण्डितं॥ उद्दिनाकाचनिष्प
न्नहानजाकिनीमालस्कंध॥ पञ्चयदालभावनपञ्चधूपादिगन्धवग॥
पश्चावास्यसमूल्लानं तुजलकर्मादिकायथेग॥ हस्तद्वयसपृष्टिकल
ममाकायपाविकायथग॥ ॐकमलाय स्वाहा॥ पमसूत्रमन्त्र॥ जलमध्य
स्ससम चन्द्रमण्डलमण्डितं॥ स्वगन्धप्रारि संछन्नं तावयथाबीजमेध्य
कं॥ बीजनपनिष्पयञ्जालस्वासत्वुस्तं॥ चित्तुजसत्वपर्यङ्कसवी
रूपशलापितं॥ वज्रदण्डादिजानस्वासिगवर्णकुकीलितं॥ हसितमक्रो
धभंगाय सलोलावज्रलक्षितं॥ दर्शयसमयसूद्रादि समयसमूद्रादि
याजितं॥ क्षोहल्लीश्रूभ्रान्मरूपिह्रंदचानर्जनीघयप्रसायथग॥ श्राकृष्य
रज्जिकलासमयसूद्रा प्रकीलितं॥ ॐ समयाजि स्थहूं स्त्र॥ समयसूद्र
मन्त्र॥ कमलेपूर्ववीजानां उरूपधाविभवचा॥ पश्चिमनतुवगा
ली दक्षिणे स्थितम४॥ सिधिनामंगलीणा मांश्रालयां व्या

प्रियकलशा॥ जम्बूफलनैवेद्ये समपा वायथा लक्ष्मीकृतगणे॥ दपक्षिविमलतुद
र्शयत्॥ समयमुद्राबद्ध॥ पूर्वस्थं पादिगाङ्गन पूजयेत दिव्यकायथा॥ वज्रम
ष्टिद्वयं कृत्वा वामहृदयस्थापनं॥ सम्पुटकृत्वा पयथत्॥ मूलमुद्रा प्रदर्शि
त॥ ॐ हूं स्वाहा॥ सितयथादिकृ उसमई वं कृतकदापयत्॥ दनन्दय
ऊर्ध्वतुष्टी पितकृतदापयत्॥ सक्लस्याचार्य मन्त्र समसृष्टा पालनदाप
यत्॥ अनेन तु कर्म सस्यापूर्व द्वीनिसर्वविशा॥ कनयैन नक्षपूज्य णह
वीर्यैकसमन्वितं॥ अनेन कर्मणा हसगहसानितु कीर्तितं॥ समिधन्ना
गपुष्पश्च श्रीयथालाय यापयत्॥ अनेन नतु कर्दम्याम सानि गध
यच॥ हुआस्य सर्वकर्मादि पञ्चानि समभिधानिच॥ आयतदपिनमा व
ऽभगमानिसृणारुवत्॥ प्रियं विलम्बो ऽथवउसतकृत दत्तथा॥ या
जयपाजकर्मादि पयचाङ्कवरहन्त्यणं॥ चतुर्दनिसमन्त्रीभा पूर्षिकं
पविलोपनम्॥ ॥ इति श्रीमद्भत्लीद्वितीयपटलः समाप्तः॥ ॥
अथ वज्रमलराजन् समाय पावलङ्गुलं॥ लावालावविनिर्मुक्ता शुद्धा
शुद्धविवर्जितम्॥ अद्वैसोऽधर्ममज्ञातु द्वयगवस्यवर्जितं॥ रूपशून्या
दिशून्यानाम सर्वसम नास्ति गं॥ अपु चातु च मध्ये तु समगाय हिष्टं
यलेय॥ सर्वस वितमध्यस्य सम ज्ञानन सरवत्॥ समर्पित गदह
नां समस्त लिङ्गवाक्यवत्॥ समदर्शन दर्शनां समं ज्ञानन वंगता॥ ह
गव (द्ध)सर्वभिच्छामि समदृष्टिस्तु कीदृशी॥ अदिमम्यतु धर्मस्य कथंज्ञा
नयमान्मध्ये॥ अथ वज्रपाणिरूव अद्वयज्ञानलक्षणं॥ वर्जितं द्वयरा
वस्य अद्वयाधर्मज्ञानिनां॥ त्रिलिङ्ग आचार्यसुयोगि सर्वथा गादिमन्त्राणं
स्थितावरणाद्वासर्वधर्मी स्वरावशुद्धादि॥ वज्रशुद्धा सर्वधर्मी वज्रधृग्वा
हं॥ त्रिलिङ्ग आचार्य मञ्जरत्सामनूरू वसैवकायथत्॥ मेनानूलप्रदत्त
पूगस्य स्थानस्य आविभं॥ विगानाविगमा श्वेवनानाव श्रुप्रलम्बिका

पताकाध्वजमुक्तिस्रक्किंकिणीजालमण्डितं ॥ समन्ताद्दशदिग्स्थाने श्मशान
मण्डलानि तथा ॥ स्फटिकाकारयोगेन आलम्बरस्तु विनयस्य ॥ श्मशान
स्थानडाकिनीमां मुजाकर्षस्तु शून्यगम ॥ हस्तमूलज्ञानस्मस्त्वावज्रगर्भसेवन
स्यथम ॥ स्वस्ति मंचस्थानस्तु सम्पापाताल शोधनं ॥ हंकाशगपाक्ष्मगः
मोघाग शून्यका ॥ मरूमूर्द्धिस्तु संविरस चतुर्वर्ण साहितं ॥ काञ्चना
गानसम्भूतं शुभपत्रविचित्रितं ॥ किंकिणीजालमालानसमन्तास्तु छ
त्रिस्तवं ॥ वर्णसमुद्धानां सर्वमन्डलस्तु शून्यगम ॥ वज्रमयि द्वारावश्चवामदय
स्थापनं ॥ सप्तकाकिकमसत्कि मसमयमन्डस्तु ह्वापयगृ ॥ सूर्यमण्डलसन्नि
भं स्वगच्छत्रा ॥ लिलच्छत्रं ॥ आसनासननिस्त्रस्सहानडाकिनिमध्यच ॥ त्रि
मरवं षडभुजं चैव सत्त्व पर्यंक वस्थितं ॥ विकीर्णकेश विकार्यपञ्चरसघा
लुमण्डितं ॥ नीलवर्णमहायावीसर्पारत्नभूषितं ॥ हसितं क्रोधरोम
त्रिनत्रावद्दिनत्रिनिश ॥ स्वर्गासीकपालानिस्तु नकोवज्रासद्गोहितं ॥
खट्वांग डमरुचैव धनिनीयन्त्र सभरच ॥ सगीयन्तस्तु वज्रानाबामयपक्ष
स्तिनाहितं ॥ सितवर्णमुण्डोला द्रस्तु विकीर्णकेशरत्नभूषितं ॥ द्विभुजं सत्त्व
पर्यंकं सर्वारत्नस्नभूषितं ॥ खट्वांगयोगपात्राशांसद्गोलावज्रभूषि
तं ॥ लाभिज्ञानामनकापवरावयवज्रडाकिनी ॥ ज्ञानस्यासत्वरायोगन
आलम्ब्रसिकानिस्तनं ॥ पीतवर्णमुण्डोलस्तु सत्त्वपर्यंकवस्थितं ॥ वि
कीर्णकेशमण्डीयसर्वारत्नभूषितं ॥ मुण्डोलावस्त्रदस्तु विस्तु
तंनविराजितं ॥ खट्वांगयोगपात्रधांधावडाकिनीनामगम ॥ ज्ञान
पश्चिमरागेस्तु आलमवायुविनिस्तनं ॥ द्विभुजं सत्त्वपर्यंकरक्तवर्ण
समप्रभं ॥ खट्वांगयोगपात्राणां विकीर्णकेशमण्डितं ॥ सर्वारत्नसर्व
ङ्गमुण्डोलावस्त्रभूषितं ॥ धर्मातीतानामडाकिन्या रश्मीकालाव नक
मथ ॥ ज्ञानस्य दक्षिणेराले पृथिव्यामास्मनीसमं ॥ द्विभुजकं नीलवर्ण

स्वलेखिता ॥ नवमं सर्वागमपात्राणां सर्वालङ्कारभूषकं ॥ विकीर्णकं गगनमण्ड
लजडसहितां दुरुदधी ॥ चण्डालीनाम शाकिन्यां दक्षिणे कालमनन्तस्य ॥ श्मशा
ल पञ्चकं भानि सरस्वत्यां शाकिनी नाम नाथ ॥ रावणस्य स्वधर्म पञ्चत्र्यशीति सम्पूर्णं च
त्रिकपालिमन्त्र ॥ ॥ ॐ श्री नमः स्वस्ति श्री शान्त मर्यादां मध्यपीठ उच्चिता यत ॥ सि
द्ध पीठादि वर्णसम्पन्नारुडी गम्भीरं ॥ वज्रांकुशं चतुर्भुजं मांसशोणितपूर्ण
सम्पूर्णं ॥ रावणस्य चण्डालिनी दण्डनाथ लक्ष्मी ज्वालमनन्तस्य ॥ श्मशान ध्यायेत त्रि
कालं मस्तकं पञ्चमासनं ॥ त्रिपुरभैरव नीलसमं शोणितरावणत्रिलोचनं
शुद्ध अविनयपाशितं वामे वामगर्जनी सवरा ॥ रावणस्य ज्वालिनी दण्डनाथ
लक्ष्मी ज्वालमनन्तस्य ॥ नैऋत्ये जम्बूकी देवी शुद्धरासी दयानन्दी ॥ म
हिषासनं सर्वभूतानाम् कामदा सर्वाङ्गिका ॥ स्वशोणित रावणस्य त्रिभुवन चतुर्भु
ज विराजितं ॥ अङ्कुशपाश गर्जनी सर्वालङ्कारभूषितं ॥ ज्वालिनी सर्वमाङ्ग
लक्ष्मी ज्वालमनन्तस्य ॥ वायव्यां लङ्किकाय देवी धीगम्भीरा सर्वाङ्गिका ॥
नागमासनं माल्य आयुधं सर्वाङ्गिनं ॥ त्रिपुरजसत्त्वपर्यङ्क शुद्ध
अपाशगर्जनी ॥ ज्वालिनी सर्वमङ्गल लक्ष्मी ज्वालमनन्तस्य ॥ ऐशान्यां डा
किनीमसि धुवा स्कन्दचण्डा एका ॥ पूर्वे डाकिनी नाम त्रिपुरभैरव
र्णिका ॥ प्रेतमासनमासीनां सर्वालङ्कारभूषितं ॥ ज्वालिनी सर्वमाङ्गलव
क्ष्मी ज्वालमनन्तस्य ॥ पिङ्गलोर्ध्वकेशी योगिनी उल्लक्षित ज्वालसमज्वालं ॥ सर्व
पङ्क्तिप्रहस्तानां अट्टहासिका घनगाभा ॥ उरुवक्षोपिता ऊर्ध्वपीनवर्ण
पीडिका ॥ अर्धचन्द्राम्बयलल स्पर्शि जडव्रतदीपवन ॥ कपाली धावन्
पञ्च स्वशोणित रावणस्य भूषितं ॥ प्रेतमासनमासीनं ज्वालिनी त्रिसमुद्रं ॥ प
श्चिमे भैरवी पितृदेवी त्रिकावर्ण दयानन्दी ॥ प्रेतमासनमारूढ स्वशोणित राव
णस्य भूषितं ॥ नकुलस्य हस्तानां अजलम्बु दृष्टिवपिवन ॥ अर्धचिताज्वालाप्रस
पीडी राक्षसीप्रतुदेवकी ॥ कपाजीनाम दक्षिणे पाकहस्त वर्णमसमप्रहं ॥

प्रथमासुन मासीनविकीर्त्तिं मममन्त्रिणं ॥ नकावगुरुसुखरानांगारेष्वथ
सुधिणं ॥ अननोसूसहासानांविभाहसर्वचगसा ॥ अग्निकालमुखोनंडीश
ययसर्वसर्ववियिजा ॥ नरिविचियाजिनग्रसमनयक्त्तोपिदर्भयगा ॥ अग्निलान
लसपर्थवज्रवीजनरावयज ॥ विन्दुनादसमन्वज्ञोना पैचावर्बरुनिस्कमाप्र
थमाङ्गगशूगसज्ञानडांकिनिवीजवग ॥ सनपूर्वाद्धिवीजानि प्रथमाङ्ग
शुगिमां ॥ षष्ठीनामरूर्वसवीजानान्तु प्रकीर्त्तितं ॥ स्मनवर्गद्वितीयस्य प्रथ
माङ्गगपाजयेत् ॥ अग्निरुस्वान्तस्थाने घाजडाकिनीवीजवग ॥ सस्यवीज
प्रथकासदशुपार्श्वादिस्थायपूग ॥ प्रथमाङ्गनसंस्कृत्याविन्दुर्द्धं तथा
प्रथमा ॥ प्रथमाङ्गगशूगानां वशमस्त्रिभवीजका ॥ नपन्तासर्ववीजस्य
प्रथमाङ्गगशूगिमां ॥ रुणेभा मांसिंधिनीदवीवीजानां पाविकीर्त्तितं ॥ न
पूर्वाद्विवीजस्य प्रथमाङ्गगशूगिमां ॥ अलक्ष्म्याबीजमाख्याना प्रा
दवगिगयद्य ॥ नयन्नाद्विवीजसप्रथमाङ्गगशूगिमां ॥ नेमस्याद्वकीद
वीवीजानान्तु प्रकीर्त्तितं ॥ चतुर्थेन पूर्वस्य वीजस्य प्रथमाङ्गगशूगिमां ॥
वायव्याललिकिन्द्रकारवीजानां च प्रयाजयेत् ॥ पञ्चमस्य तु वर्गस्य नकाः
वविन्दुयाजितं ॥ प्रथमाङ्गगशूगानां दीपिनी उरुनवसग ॥ पञ्चमस्य
तु वीजस्य तु कारनविन्दुयाजितं ॥ पश्चिमां रूपिनीदवीप्रथमाङ्गशूगि
मां ॥ पञ्चमस्य तु वर्गस्य द्वितीयकावगव्यकोगा ॥ प्रथमाङ्गगशूगानां प्रथ
मह्रस्वियवीजकं ॥ कंवाजीयद्विमस्थानवीजानां पाविकीर्त्तितं ॥ उ होमूह्रि
ह्रदं वध्वा मध्यमादीप्रसार्यत ॥ अङ्गुष्ठाग्र समवस्थानद्वयमुदर्श
येत् ॥ दोह्रतोलयहसास्य अङ्गुष्ठमध्ये सन्धनं ॥ मध्यमानवर्षीन पूर्व
वतुक्तु दर्शयेत् ॥ संमोमुष्टिहृदकृत्वा ॥ पश्चिमस्वभिणीदवीमङ्गनस्य ॥
याजयेत् ॥ अवर्णदोरिहस्तानां स्थितमङ्गली अङ्गुष्ठ ॥ युग्मस्थानानियाः
कार्य दक्षिणं दर्शयेद्वाजी ॥ प्रथमाङ्गगशूगानां नामधेह्रकारयाजयेत् ॥

हृत्पद्मे सार्धसर्वं प्रांगं यमुत्सममन्त्रविश ॥ शून्य नाभस्थविन्दु नां प्रथमा ॥ हृत
मन्त्रिमां ॥ प्रसार्यग न्धमुद्रस्य शून्य स्वाधमाजयम ॥ पृष्ठमूजादिमन्त्रस्य
दापयसर्वसर्वस्म ॥ वर्गपूर्वस्य पूर्वस्य प्रथमा ॥ हृतश्रुनिर्गमा ॥ स्पृष्ट मृजापि
संप्राप्य मध्ये शून्यस्थ धाजयम ॥ नवांना वीजसत्र प्रथमा हृत शूनि मंत्रा ॥
सृष्टिस्थ वातु शून्यस्य मुक्तिग द्दीमनुदिका ॥ पूर्ववर्गस्यान्त्य कानाहवि शून्य
धाजयम ॥ स्वनसाहृत शूनानामलिवीजसमुक्त ॥ द्वो स्वौ कपसायंत्र शून्य
स्थमध्य चालयम ॥ मूरुचालिनसर्वसा वलिमन्त्र समुद्रवम ॥ पूजय दाप
गलन शू देशुवलिपूर्वना ॥ पक्षाडया लिप्तवांपि पर्ययुत्ता वि क्षानिव ॥ प
ष्ठपूपादिग श्वसमूजामन्त्रन्त धाजयम ॥ पद्मदवि भगिमूजात पूजयथय
विचक्षणथा हूं काय गोनिका कायसाप यत्सर्वयागिनी ॥ कखगघिद्व पंवध
द्योक्षदिस्थले धावयम ॥ हूं कायमह शूगवालयम ॥ बीजा काय गर्वीजं ॥ खजा
कायणध्वजं ॥ लाकायणलामं ॥ वाद्या कायणवाद्यं ॥ पद्मलाकायणपद्मं ॥ मसी
कायण शूगचालयम ॥ ध्वजनाकाय धस्मजनं ॥ ध्वजाकायणध्वजं ॥ विमाना
कायणविमानं ॥ पद्मकाकायणपद्मकं ॥ छत्राकायणछत्रं ॥ मोक्षाकाय
णमोक्षं ॥ पनवाकायणपनवं ॥ हस्तिनाकायणहस्तिनं ॥ ज्ञाक्षकायणज्ञा
ध्वं ॥ शृंगाना कायणशृंगानं ॥ ललिताकायणललितं ॥ पूजयत्सर्वमस्तनि
शूस्थयागिनीगतन ॥ गन्धवगीनिका कायहूं काय मास्वेनिमिना ॥ वन्ह
सस्वश्रमनस्त्वायान दमन ॥ शूरवलायसन्नविलासिनी शून ॥
लायायवविमूल ॥ शूमज्ञविज्ञानिशून ॥ रजिप्रशूश्वर सर्वमस्त विविनि
शून ॥ वन्दालिकुनजाय मालिला कर्जि शून ॥ धर्मश्व दसस्पा विश्वभावि
माविशून ॥ मृदसंसायविर्माहि शूमास्व विकर्जिं शून ॥ सत्वसना वजा शू
लिमाला विशर्विजिं शून ॥ पद्मश्वविजाय स्त्रिय गलवतलारिव शून ॥ नाय सायि
नयसन्नविपाचि शून ॥ यहूसाय गरुक्र धर्मयिमाहिस्य ॥ नमस्तुसमाय

सुधर्म्म शास्त्र विमोचकाय ॥ नमोस्तु योगाधिपतये सुमात्मने ॥ नमोस्तु सर्व्व लोक
नाथ शासन ॥ नमोस्तु संसारार्णव भवस्य तुष्टकं ॥ नमोस्तु नन्देश नमोस्तु सन्म
त्र निधि विभव सर्व्व गोमि लाभाय हान भयायाम ॥ हुंकार पञ्चनाम यम ॥ ॐ भक्ति
शीमका योनि ॥ वज्रोपशोभित वज्र पाणि दिङ्मानस भासय ॥ ॐ सम्भवाय स्वाहा
ये धर्माय सम्भवाय स्वाहा ॥ ॐ वज्रधृक सर्व्व धर्माव वज्र स्वाहा ॥ ॐ योगस्थ स्वाहा
ये धर्माय योगस्थ स्वाहा ॥ क्रम लावर्त्त मात्मस्य दक्षिणे पश्चिमे निम ॥ वामेन
पञ्च सूचय महाम्भ स्वस्ति धीमान ॥ ॐ हा ह्रीं स्वाहा ॥ न हाम्भ स्वासन्य ॥ सम्मा
पितव योगीना सत्सङ्ग वा पिषिनम यम ॥ तानि मानि योगीनां वासभ सुख
सिंग ॥ प्रथमं वन शालि म पथम यस्थ संयम ॥ पथक्रं पन सप्तसाग प
क्षयोगस्तु ध्वा पयम ॥ पञ्च सम्पन्न मामिश्च सूक्ष्मादि ध्या पयम ॥ लक्ष्मी
स्वर्ग लोकायगं मना मन ॥ ॐ क्रोध वीर्य रन्मा व क्रम व वा विधीय
म ॥ त्रिविधं त्रिलिङ्ग चार्य्य त्रिलिङ्ग वादि ध्या पयम ॥ प्रभाश्वर्य रूपसर्व्व रे
कांगीगस्था दर्शराव सत्ता मनस ॥ आस्वाद वज्र ध्वनि वज्र पाणि व्यारि
दवा त्रिलिङ्ग वादि ध्या पयम ॥ वाम वज्र पाणिश्च वज्र मक्षेत्र रूपाय
स मना सर्व्व विलोके रूपस्थ क्रीम भवच ॥ सूना मासम्मना सम्भावनं नम
पेनिम लक्ष्म विध्वम क्षापयम ॥ प्रथमं योगान सर्व्व षाक्ति दिगा तस्थ सपय
म ॥ पश्चात्क्रम सर्व्व न शान्त मनं वज्र धातयम ॥ पञ्च रस्मा व रूपसत्ता
पयस्था विध्वनत ॥ जिह्वा येविनस्तु दानां त्रि लिङ्ग नस्तु बुद्धिमान् ॥ पठि
सूत्रा लिङ्ग धर्म्म नलिस रावनमय ब्रह्म सम्भव स्वाधात नक्षसलाव खडर ४
सूरिग ॥ येन दान व्यायोग योगिनी मञ्जुल ॥ क्रमता वर्त्त पूर्व्वे चिह्न रुहाटि
क्षयवन ॥ त्रिसत्त्वा वज्र संदर्शयायि शंय ममासन ॥ स्वाग भोधर्म नरव्या
नाग लाधिगमन ॥ गाहा गाहा विवर्जिता मयमं रूजानिग्र ॥ सूरसग
अनुगक्ती या ध्यायगासि द्वार्थ हस्तुना ॥ यथा मा चाय गतन सर्व्विसर्व्व सिन्

योगिना॥ यथासूत्रवशेनिवक्काय वक्कामण्डलोल्लिखाक्षत्रिकारावदिम्नायस्मृ
वज्रमुष्टिद्वयं बधा यस्य पृष्ठेन योजयेत्॥ कनिष्ठाद्वयसंवेष्ट्य मार्जनीद्वय
मूर्छिना॥ सर्ववश्यविरमसायायामसायवश्यवाश्चदिव्यणा॥ ॐ कुरु कुरु समयाधिप
तिरुं जः स्वाहा॥ आवाहनमुद्रामन्त्र॥ वचनपुष्पाक्षधूपनगन्धदीपादिदापय
न॥ उदावयति कोलंगुमन्समान्त्या॥ दिमारुतेकेधारवाद्यसर्वासिद्ध्यादि पचर
ऋ मनहर्जिन॥ वामहस्तानिहस्यस दक्षिणे जावधरुशयेन॥
ॐ नमक कम्भानवापवेगकन्दवतुक्क॥ ग्रामपार्श्वे पल्लवकत्नागाभिवि
यक्किन॥ लाजनस्कलगगनम्यासामगात्रविलेपणधारस्पृक्रमलावूडुद
वरुद्धसमाश्रिम॥ वस्वस्वकायवीरस्य नदागीगविनायक॥ चामुण्डी धावी
वीरस्तु माद वीत्तुसंरवाथ॥ जयाचविजयाचैव अजितापराजिता॥
रुद्रकालीमहाकालीस्कलकाली तु योगिनी॥ शुण्डी चण्डी पावी हृदी वज्रकी
त्रिदशेश्वरी॥ कपाली दीपिनी चाडिम्नाश्रमावस्किनु योगिनी॥ धामसपा
महानूपाडस्वरमाकपालिनी॥ कपालमालिन्माखट्वाङ्गमयमहर्षिका
खड्गहस्तापत्रहस्तावज्रहस्ताधनुस्तथा॥ पञ्चेन्द्रियिनीमहानन्दसर्व
कर्मान्तसाधक॥ योगमण्डलमेदवाजी मजेश्वरी प्रस्तुतथा॥ तथा गण
महाकायनिरजरनयोगशक्तिका॥ रुद्रवज्रेश्वरीयाह्लसावाहनसर्व
सिद्धिना॥ ॐ कमकमधन वववमन खखखादन हनहन घघघाटय
सुमुक्कसहूं २ फट् २ जः स्वाहा॥ अमनं मरवमापूज्य यदिकर्मादि विनि
नं॥ शावयेयागयोगीना सर्वकर्मतुसिध्यति॥ वज्रमुष्टिद्वयंबधापृष्ठेन
योजयेत्॥ अनामाद्वयं वस्वस्वधावधग्खलिमाङ्गुलि॥ ॐ रुद्र २ सर्वय
गयोगिनी योगेश्वरी हूं २ हुं स्वाहा॥ यथाकर्मादिसिद्धये बलिकर्मादि
योजयेत्॥ सानि पृष्ठिवसाकर्ममायया॥ धपत्रहानं॥ बलिदुर्गत
नबलिकर्मादि साधयेत्॥ अथपूजाविशेषास्तु कल्पाकरपाविवर्जिते

श्रुत्राधिपति पञ्चरक्षस्य मंगलादिकार्य यत्॥ महासामनामानी ज्ञानश्च
वग श्रुस्सान॥ [illegible]भस्य अत्रासास्काना वृक्षेपि मलयान्॥ माहयाज
महासत्वा॥ अभिमार वलनवृक्षा॥ पञ्चरक्षशमादीनि सर्वमन्त्रप्रयोज
यत्॥ पञ्चदश्यां सर्वदेवस सर्वयोगिनी त्रीश यत्॥ न रक्षामनवाश्येवन
त्रुसालेन याजयेत्॥ स्वस्त्यावे सर्वसर्वेश पूजाकर्मादिकार्य यत्॥ गलसमत्रे
गिर्वाजानां आलिकालि प्रयाजयेत्॥ आलिकालि प्रयालेन सर्वदेवगणाम
यत्॥ नमस्य मम (श्वकु अमनास वत्वाद्य यत्॥ मयादिसर्व वस्तुनावाक्य
मण्डले याजयेत्॥ हूंकार गीतिका कार्य मंगलार्थं निपातिन॥ पञ्चमहलाव
विसर्जि अनहि श्रुस्र गच्छन्तु॥ गन्धालि गभजार॥ माश्रविल अत॥ हूं र
वज्रघण्टा शिलानाद स्वस्वस्त मंगलगीतिका॥ वज्राञ्जलित्रय धावे नन्दि स्का
पिगवान यत्॥ अपघ सर्व रूस्वादी लभिधानादिकार्य यत्॥ सर्व सत्वार
स्वीरस्तु सर्वसत्व निवामया॥ गच्छन्तु यजमानाधिश मृद्वतलगमन्तु॥ अ
नीरूर्लोनावर्धि घ्यामि श्रू मुकामानाचयाम्यहं॥ वर्द्धमानन पीतु या गात्रा
क्रियाम्यहं॥ वज्रसृष्टि दर वक्षा वामनदय स्थापनं॥ सप्त स्तनप्रमाण्य तु
लन्मोला प्यविवर्ज यत्॥ ॐ आत्मणिस्व हूं स्वाहा॥ पश्चात्तु आत्म मध्यासन
आसन दक्षु तलीमण॥ इतिमाकार यालेन पूजयदात्मरावयत्॥ ॐ
सर्वदुस्त्रनिष्कार गच्छ हूं रूं रू॥ मुद्रासामस्यदध्या देवाश्च देव विसर्ज यत्॥
॥ इति पञ्चपीठ स्थानीय चपटल समाप्तः४॥ ॥ भगव
क्रोधराभिक्षामि पञ्चराष्ट्रगविलेषणथा॥ अरूणादन पञ्चरक्षसशूलिका
तीकथ स्वहा॥ अद्वयाद्वयधर्मस राद्यारा वीयकल्पित॥ वाक्य मुद्रा
पूर्वि स्वस्थागतात्रकथ नव॥ ॥ भगवानाह॥ पूर्व अमग
पञ्चाम्र पञ्चरक्षा साप्रय यथा॥ अभिरस्माचभस्मले वाय्वक्ष मसदण्डन
आपडे वस्त्रनावर्य पिथांगु पदमोग॥ ज्ञानाविष्ठित वज्रेण पञ्चरदेव

सन्धायत्युत्तु ॥ सकलं शून्य सम्ज्ञान न्याय गजाननं लिय वा ॥ य भावाय श्रुनिसार
गां दस्तासे पणिवीं साक ध ॥ विन्दु यादतस पाप्ते ज्ञान यं का व पर्वश्वा ॥ गासेप
॥ धस्तु वक्तुस शु म ना न्द्य मध्यमं ॥ पद्मप स्वरणिवक्षत्य वज्रान्स्यासाबाब्ध
नं ॥ तावा तावविनिर्मुक्ता नस्या ता गानि वन ॥ वाक्यास्य गस्त्र मसानि सा प्य
नाशिपावनं ॥ सूक्ष्माया ज्ञान मार्गेत्तु ज्ञा ताविय पा ॥ अग्रि पा स्वज्ञनि
ना न सु म धस्तुमा रूपं ॥ वज्री मृपसवीज नजयं स्वरे वस वीजना ॥ न स प
(क्षेत्रज्ञा ताप्यं विश्वरूप विविनिर्मिता ॥ तावा तावविनिर्मुक्ता गस्या ना गानि
न गर्भ ॥ पुमे श्यन र पस्मा स्युजाणि गद्योदकं राय स्ना चनेश्वरा ॥ ज्ञात्व
द वज्र श्यम वज्र पाणि त्रयाणि देवादि विद्यन ज्ञापयतु ॥ हस्ता न सनाप
श्रेषु तावा न मस्य नाजन ॥ जीवा न योगं स्याने जमतु योगि वीयणं ॥ अ
मगमाद कलासा स्वा शिरि देवता प्रवर्ति जा ॥ तावा ताय वि निर्मुक्ता गस्या
स्ताने प्राणि सु जप्तु ॥ ॥ प्राणिस्त्र म मनि सारु ज्ञ मना वक्त्र रे वपा ॥
ज्ञानिमा काशपर्यन्ता धर्मधातु स्वभावजा ॥ सकला सत्त्व द्वाला स म र
मध्ये ॥ स्वस्याद काशिग्ध क्ष पिशमना सर्व श्रुतिया ॥ ज सम क्षेत्र स्वताय पा
रे वव वक्तुना नम सन्न याग ज्ञमगर्भं ज्ञानिता न त सप पत्री वी
ज न याज पत्र ॥ विन्दु ना दमस ज्ञाता स्वभाव सर्व भूमि सम्पा ॥ स्व न सूक्ष्मा
दिवीजस्य ग स म क्षेत्र धारय तु ॥ तावा तावविनिर्मुक्ता गस्या सारूप
विस्मजतु ॥ कालीय दृश्य मा ज्ञात्तु दृश्य क्रिय स्व विक्रिया ॥ सस्ता वा पुनि सर्व
सं मा न यस्य स्तमिता ॥ ज्ञान मय सम्भूता नी ज्ञान मकरा मीन दैधात्रे व
धायक मस्वेत्र पाप्यमव कानरु ॥ विकस मन्वक्षनिर मध मम पमाला
यं ॥ काली स्मजग सीवा विवर्णा पृश्य मन्द पशे ॥ क्रिय शोभा विन्दु ना म
न ना द न पाजय पत्र ॥ गस्य ज्ञाना वीजस्य देव ना ज्ञा ज्ञा गमा ॥ स्वरूप
स्तम्भित्स्य ज्ञा शास्रीक्षितिजा ॥ तावा तावविनिर्मुक्ता गस्याद्विस्व पि

स्वगत॥ ॥स्तुति अग्रमणि साइकाली नाऽञ्चनमागनी॥ उक्ता हयमृ

सुवक्त्रस्मा या धिमूर्ती॥ यथा युगे दुर्गी योग सृष्टि नगाव गच्छेमी॥ दण्डमा

सुवक्त्रस्मा या धिमूर्ती॥ [illegible]

त्रसवज्रानां भरवत्तादि हि वपथरा॥ [illegible]

दहिना॥ [illegible] पञ्चमुग [illegible]

॥ [illegible]

[illegible]

नमस्वरति॥ यश्चद्भ्यासि यक्तानिश्वाफेह हृतडुयान्थयन्॥ दान यरवाय पान य्
शूदक्ष्यवशमानूयात्॥ तकजापिकमन्त्रा ताजाकिनी पतिथिक्षिन॥ ग्रहिस्
पूकम्सस्रहवाम्भा नसेनया॥ ।हगजन्न्तडुमिक्काभिन्त्रतुयां गिनि
साधनं॥ रजीन्मजियाल नशिमिदसिद्धियागिनी॥ श्रयवक्तुयथा गतहृति
कर्मप्रयाजस्मत॥ सर्वकर्माणि सानस्प्रयत्न हृतिसाधनं॥ तकवक्तसंम्
लसाविधिनालगंजायथयन्॥ धौर्यपापादविलार्यमगस्पाणिपिथिन॥ घा
दशायस्थमाजाना पीतय रसेसूत्॥ हिनं॥ स्वोरयभगा॥ जतु नकवस्त्रश्चिप्रा
दृतं॥ क्षितुजंगृह्मन्त्रस्यास्पिक्षातसमप्ररं॥ साधकाश्रूयविलार्य विधिप्
आदिगसत्॥ नकस्याद्विगन्धससत्कामान्साद्दिपमयत्॥ उदानवलिका
दयाममत्तमात्सपतछूकेधापश्चरवक्तुनिड्याथि पूजात कजपनतु॥ प्र
धमतद्धमूसत्र क्षिनीयगन्धमनग॥ सूतीयकम्मयकादि चतुर्थश्रूयनः
ष्ठिनं॥ यमनमूतादर्शयत्॥ मन्त्रमसेयमूचार्थं॥ ॐ दीपमवीहृंयुं हुं॥
होहसोशृजारतिकत्वा मर्द्धिस्कापयसमयमूजा॥ पञ्चरशमगजूपपञ्चरस
मया दक्ष्यापयत्॥ समयपाप्यवृहुंहुं पामहस्तेतगश्काण॥ सिद्धांसिस्म
या पिन्या ह्मपारिस मधिक्षिनं॥ सत्पापूयधावि स्वाश्रकणकादिपान
यत्॥ सोवर्णकविषयकं॥ जक्यानकशाक्षसभेथनाप्रियथागिनी॥ यदि
नमिर्भागिदीपिन्याधारीशीजं नपीठयत्॥ पीयमानाप्रियोजानां दीनी
मूर्द्धस्कापयत्॥ तार्यापीपिनिसाक्षत्तसतार्थप्रियमसुयं॥ श्रयवक्तुय
धागतवजूपयेश्वसाक्षजाकिनी॥ क्षिरसांपटमाहृरंपूजाविश्ववलिंददत्॥
पश्चाद्विविधिनरपसमिगनकमत्॥ हिनं॥ क्षितुजनलिगपादसूतोल
वृक्षतूषिनं॥ नजेन्नादूमहस्तानाविधी रस्कणमस्थिनं॥ श्रीयक्षात प्रशादि
यंगृहहासीतुकश्कनी॥ यथिवीराजनमास्टं घटविसार्यसंक॥ समंगान्
विवमालिपन्नकायपूजादिसर्जिनं॥ आदानवेतिमापर्यग न्धेश्चपाविभ

मगष॥ पञ्चरात्रगत समारभ्यमत्स्य मानसपलशुक्लेष॥ यागीजाधिपतरा वानासिद्धि
सक्कीपिजायग॥ दोहसोऽजरशिवक्षामूरखप्राक्रियपहासिद्ध॥ ॐ नउत्तीर्ण
ह्न॥ साधकस्य मन्त्र॥ प्रथमंस्नान संकल्पादिनीयं हास्मायग॥ तृतीयं स्नाय
दृष्षणि चतुर्थे आर्य मार्गनष॥ समयाद्यपयत्नेन पञ्चरात्रगतविशेषणष॥ पादि
ऋद्धगपञ्चाद्भिनी तामिसिध्यमि॥ हिन्नामार्गशरजुलाऽपीठायसमा
या॥ ऋद्धकर्मादि सुर्वसांचानिकर्मादिसिध्यमि॥ यदिसंसयपतलगणवडीवी
उनमोतपग्॥ पूर्वसवाविधिमन्त्रसमूज यद्भिचक्रासष॥ छागतस्तत्व
भंश पञ्चविसार्ययतनष॥ चक्रायपंचलोरात्रु चित्रिनं यागरूपिणी॥
सर्वालयगताग्रस्तु सरोरावस्त्रहृषत्॥ वामनवकवासतु दक्षिणपत्र
श्रविनसर्॥ चतुष्पथेप्रस्थानपसाधयथ्विचक्रायष॥ एामयनरुमालि
पप्रकीर्णविविधपुष्पकेष॥ धूपगन्धादिथिपानंतुक्रिकवलिसाप्यग॥
श्रक्षिनामसमासनमलयुविविधश्लक्ष्णकेष॥ पञ्चरात्रगतरुदापनजपष॥
नाहिनसर्व॥ ॐकर्षयङ्कुरुहूं॥ दोहसोपासाकावशजीकथग्॥ हृदय
मुद्रा॥ लक्षेभकजपध्यागी रूपिनीचापिसिध्यमि॥ खानाद्दानसर्वगाद्धि
गीयंतत्वसमर्थ॥ तृतीयमास्त्रयाशीनाहिसमर्थनआगमा॥ चतुर्थेऽग्र
स्थितंआज्ञायस्तुगिकिंमया॥ समथादाप्ययत्नेन पञ्चरात्रगतविशेषणः
दविज्ञानमयासाध्यप्रशिक्षाहीन सत्वगष॥ गगादिनसोवर्णपलसं ध्व
वादसामि॥ अभिद्धनंतलक्षनवगालीवीजदक्षेष॥ पीठथगजस्यवीजन
रूपिनीमहिस्नायष॥ ॥नमीहलप्रदर्शकवाजीसाधकनुत
गवाचर्मादिसंस्तार्यकवाजीरपत्रिविंग॥ सर्वालयगतास्तु नीलवर्ण
श्वालप्रसु॥ विसार्यश्च नमावर्णचक्रावस्त्रादिप्रायनं॥ द्विभुजआसि पा
लकृद्दासीकवासिनी॥ चक्रमण्डलमिसार्यपुष्पधूपादिकावयग्॥
ॐ सानवसिद्धदयमत्स्यमांसपलशुक्लेष॥ पञ्चरात्रगतसमायुक्ताऽद्येस्व

ति हृज्वाल॥ योगीजापेतु सुवाना तु कमक्त नसिध्यति॥ ए भमन्त्र लक्षं पाहि
गीयंयनवृश्चिका॥ हृमी यवक्त्र यामंत्र व उ लं क्ष्यन शि नश॥ गन्य मम यमान
के॥ यादि हृत्स्वा ध्यणं गी धुवमा मन्त्रादि धाउके॥ केला स संगपक्ष्व नीय गां
सयाश्व मृण॥ २ ॥ मूसि साउ का कर्म थ भ्रू मकमादि याजू स ग्॥ स्राम मधि
नीस्वाम्ना नं शि मयनाथि च कश॥ तस मृ पस्म सा जामि याम पा दन पी उप
ग॥ जयत मगप क्ष्व न सि अण नात संभय॥ मूसि आउ का धन न धी गमन्थ
कुग्गानयम्॥ स्नातु य मूरव मुरव गुन ि कां व याट भर धें॥ स्वाय लवंमा
हुंकावबीजरावने॥ मृ म गता भयागिन्या सर्व मध्या दि एकदी॥ मूसि सा म
द कामंग भ्रान्निसिधक्का व यम्॥ स्त्रा स्वालु मक उ सर्पं प रवि व य व॥ हूं
क्तावयमध्यस्मा हूण सग मस्म॥ म्यग सर्वे आकिन्ना मूण ध्व लि जन्दि
न॥ अवश्य सिद्धि कर्मस्य मूर्हवाक्ष नसंशय॥ ॥ साहस्य भीत प्द र
सुहूस मयस्ति श्रि १॥ पाणहि धन ध्रहम्य पिन्द य वक्ष॥ पत्र स्थान मल
समारुद्र गा यज्ञ हृ यान मत्त मह महज्जा ह्य विमक्स॥ ॥ रुगक
ज्ञाउमिश्रा भिमडा याकंउत क्ष॥ महस्य यागया गिना यक्ष य भक्षा
पयम्॥ मृत्य वज्र यषा मत्त मूडा या यां उ लु क्ष॥ योगिना पश्चि स नाम
यागिनी या मम व वा॥ मूर्व प्रक्रि प भूयला डाकिनी न्यस्य वि म्न मा॥
थाम्॥ अउ लामर्द्धि संस्था पदीपि मया मूर्ति म्नि स्था उ पू॥ उना उ वस्य
पीउस मृषि न्यसउवि माना॥ मृ ष॥ क ग्ये गाक्षि म रुमानाकवाजी वि म
यद्धिमा॥ तम्॥ मामा प्रयल कंदयात सयागी हिम ब्लानि॥ प उ म्गनसी
यंत्र दर्भय सागा विक्षाद गसू॥ गावाद॥ क्षम म स्य उभ मत्र कस गाहि
ममवज्रा॥ मूयि दाहा॥ जिकापीडिम दमान यंतिं पूजा हि संगम॥ म
या॥ मृ षादि ह लमं गक्ष गवग हमम भ्रागमा॥ न्याग॥ हृद्य ह लम
तयन प्रि या सिमम मतां पूज्॥ मूयाम यम्॥ क ग्ये मू तम दि क्त साना सिया

वध्रूम्यका ॥ प्रसार्यउमना कथयन ॥ अस्मि संप्रस्थित देव ॥ विकासउ ॥ नाउयी
यमानपि उअरमाव मिछ्छिा ॥ चणआनल ॥ कर्जनाहिम्नू खंवर्गयश ॥ योडव
अनिधावन ॥ नीलस्तुयम ॥ ललूभगिनियगकामाहिमानम दर्शिगं ॥ अ
नगायूथन ॥ जिकालोउथगि ॥ मगासिसांव्रन ॥ हयंगि ॥ समनानिषीकृणं ॥
दिवसंज्ञाउमिछसि ॥ मामागथ ॥ प्राणियदिमावन्ह ॥ अस्यावखकानसूक्ष
मञ्जायंउपूर्वाद्धपर्वकंनसरा ॥ गिविमध्याध्व वगिजाग भउ नागदष्टि
समस्ताया ॥ पश्चिमायांउअूलाध ॥ सिम्नूथाल्लहसान माग कगूर्थ दृही
गिदर्भथन ॥ मोहस्त्रीमूर्षिद्धत्वा पूर्क्ग अग्रक्क सांउनं ॥ खितपयन ॥ सूनामा
गुथअरमगंसामञ्जाथा रास्थखायादीनां सत्य ॥ इतिसंकणवाभ्यं सत्रायगिनी
वगिकाउ ॥ ॥ इतिप्रकरलेगपवथीउ समाप्तः ॥ ॥ स्गवन
आउमिछामिअ यथलक्षलक्षणं ॥ चतुर्थ्यन्तःधम्पं ज्ञाउक्षपं ज्ञाप्रसा
उथन ॥ भगवक्व्रयथासम्यक्षंसाधकाचलक्षणं ॥ वज्रवलस्पदूर्वसपम्प
लथ्वा ॥ पिद्धिनीयर्क ॥ सभीयअक्षस्तंस्य चतुर्थक्षानलक्षणं ॥ चउध्यगलव
चगानिनीयगमाचमास्थितं ॥ मध्ये वेथाचनंदवअक्षास्यपर्वभवचा ॥ च
लदक्षिणस्यउ अभिमा रपश्चिमन्यसन ॥ उक्तध्वभाघासिद्धिउ पञ्चरस
स्पोउदवगा ॥ पभवअस्वाभक्ष यथारमंउ च्छापयन ॥ यअपाषितुभे
श्रयगगगसमनारउवस ॥ यथाविपक्वमऊरश्री पिक्वाग्निभिगिभवच
अस्मअस्नालिदवानां यथारम्भउ स्थपयन ॥ मध्येविदणअअआनां स्त्रा
नदवगलीयग ॥ पभवअस्थवीसागय थास्थानकम्याजयन ॥ वज्रा
मृथाद्विवावाविजीउना विदिसंगथ ॥ लम्बापश्वरलि उद्विन्नाम क्षे स्त्रा
नन्तुनामग ॥ एवंउवज्रडाकिन्याउक्त्वाभिभवच ॥ वगालीदिसमापा
नांवगलीदक्षिणेश्वरी ॥ वज्रगतानिदवानां हास्यउवचक्षेश ॥ य
गानथाहि वज्रस वज्रायेअ स्मचगन ॥ वज्रसाधस्यपागीनां वज्र वगंउ

कायत्रग्र॥वज्रसन्धिहृदीवर्यां॥वज्रधर्मपदंसमन॥वज्रसत्वानिसर्वेण वज्र
कर्मादिसाक्षन॥वज्ररत्न नर्यां राज्ञवज्रसंस्थानगाचयां॥वज्रकर्माधिगपाग
नांवज्रज्वालितमयागव श॥अर्थकारुणथाज्ञभविज्ञानसह दीपका॥ध्यानध
ज्ञानवज्रश्चज्ञालाकंदिशमात्र याग॥वज्रसर्वगसर्वेषां वज्रमार्गविदर्शिन
वज्रधर्मनिशानस वज्रमीकसमसंब॥वज्रश्यपद्मेमाक्रमसाधयसर्वग
सम॥वज्रपभावमीं सर्वसाधयनीयवज्रश॥ ॥अथवज्रधराय
ज्ञान घण्टनादेनरुतं॥प्रज्ञावादिगणचलानांश्रस्तंवलवमूरुवग्र॥आका
शधातुपर्यन्त वाधिमज्ञसयश्चिक्तिं॥दशदिक्सर्वविज्ञानेनलाकस्य उपर्यना
॥दिसंस्थसमज्ञागम्यअरुदवीरुकीलिम॥अस्यमनसवीजसुरूस्य द
शस्कविन्यसग्र॥पूर्वेमाधाकदवीनापासुवाउत्तरादिशि॥पश्चिमनरुमाम
स्कंदक्षिणंसद्रवाचना॥सर्वसमधात्वाकर्शी वज्रमालायत्तुर्थकं॥आकाशमध्य
रूपरूपसंपूर्णचक्रीलिमान॥रूपलक्षणसंस्पर्शधातुलक्षमलारुवं॥अ
रूपस्य वदश्च प्रज्ञाअमगरूतवशं॥प्रज्ञाअमगज्ञानेरुगस्यमेत्र्य
मनं॥रूपलवभिना वीरुपमालात्यशस्यो॥उद्रतुपमवज्रांसयथायवं
रुचिनयग्र॥ज्ञानदशलिमध्यानांसर्वसंसारनाशिका॥चालयदपदंपरु
अतिवलिप्रथागवन॥अतिकालीप्रथालानसर्वसंसारनायका॥वज्रघण्ट
सपायरुउपायमध्यचवद॥पालीध्वनिप्रमार्थ्यसदमलावर्णस्वरपचरमा
दिवाकरस्तु नाक्षित्तु चन्द्रसावामसयच॥उपायनरु दवानास्वक्षास्वरद
यादिचिन्नयग्र॥उत्रवज्रमलालसंसारावरुमवणारुवग्र॥इंक्षायगीनिका
कायं सर्वबुद्धास्तु रत्नयूग्र॥सालियवज्रमलालसानिअसमायमारव॥धर्म
विमात्रिकायवज्रलसानकु॥इंउहांउ॥प्रज्ञामयायधर्मस्त्रणिवकगा॥वि
पा॥अज्ञानपंकमग्नानां॥वज्रापायननिर्लीदप्रज्ञापायकरालनं॥उँवज्रघण्ट
यतिनसर्वबुद्धाप्रचलितप्रज्ञापारमितानादस्वराधन इंउघंउ॥ सत्वान

धर्मनादयतः॥ वज्रसत्वनमस्कोयात्र घण्टधर्मेणवादयतः॥ प्रज्ञामुपायदर्शने
सत्वार्थक्रियायोगिना॥ अनेनतुयोगीनां हस्तिघण्टवनस्पति॥ योगनत्वविलो
नस्यसिद्धिहस्तलक्षणम्॥ ॥ अथवज्रयथासम्यक् अङ्कुरशास्त्रदिनयवज्र॥
यनसम्यग्विधानेनसिद्धिमानात्रसंशयः॥ स्फटिकाश्चक्रिमुक्तिवरसिनधारय
दिमन्त्रवत्॥ विशेषशान्तिकर्माणिअङ्कुरशास्त्रदिलक्षणं॥ स्वर्णं रजतं तास्र
पत्रबीजविशेषणं॥ प्राष्टिकञ्चाङ्कुरशास्त्रार्थं गणितन्तुविचक्षणः॥ कुङ्कुमादिस्र
गन्धादिसर्वगन्धविशेषणं॥ रजतादिगुत्वक्षावसानां पविकीर्तितं॥ अश्मा
कालबीजञ्च नवाहिन्दुत्वमेवच॥ धाजयेद्वकर्मादि अरिष्ठा चारपत्रकी
र्त्तितः॥ शान्तिपुष्टियशाचार पञ्चसर्वकर्मण्यं॥ मंत्रसाधनपद्म सर्वसार्थ
भवञ्च॥ अनमश्च तुशान्तिचर मगास्वाध्विकपौष्टिकं॥ अरिष्टाचारतुषष्ठीनां
विशेषकर्मथायत॥ यथाकर्मविशुगन्तुअङ्कुरशास्त्रादिष्टाप्रयत्॥ दिग्गादि
सिमण्डलस्यमध्येषु ध्वजमस्यतु॥ नवदेवादिसपस्य नवदेवमधिष्ठयत्॥ अ
र्हन्तादिकासर्वं पञ्चोपविकाल्पितं॥ धर्मसाक्षितुरूपाना धर्मधातुश्वरतु
र्थमः॥ कमलम्पसूर्य्यमचिन्त्यस्वयम्भवादिअङ्कुरं॥ तावत्यदङ्का नक्षानाकं
नमध्येषुचिन्तितं॥ वामेनचन्द्रमध्येतु अमृताङ्कमध्यगः॥ शिवयस्तु
समस्थितिस्यञ्चाश्मी ज्वालामनन्तसः॥ अङ्कुरत्स्याभरस्तथैतु पद्म पद्मन्तु मंत्रग
॥ पद्मवज्रन्तुवस्त्रेतु सम्पूर्ण सूर्य्यमध्यगः॥ तावत्सर्वगत्वनअङ्कुरशा
स्त्रादिविष्ठयत्॥ पञ्चजापिणमन्त्रीणां अङ्कुरत्यादिविशेषणं॥ वज्रीतावत्
तु वामानां वज्रार्थं सम्पराधनं॥ साम्प्रताधेतु दिन्यस्यप्राष्टिकमध्यगत्व
नथा अनामा वक्षमाख्याता पञ्चमासारिचारनं॥ अङ्गुष्ठावज्रमङ्कुरस्य देव
ताकर्मणायतः॥ समाहितंजापपरावने सिद्धिर्नात्रसंशयः॥ अनेनतुतेन तु
योगीनां अन्तामन्तजापिणां॥ अनेनवज्रयज्ञानां अनेनस्यादञ्जागत्वनः॥
योगीनांगत्वसावेश्य गत्वसर्वांशिक्षावयतः॥ अश्वरकाङ्कुरञ्च पद्मपुस्ताकिञ्च

मविशान्॥ गणिश्रूतंरवश्रीखमिस्ठउभागिसान्॥ ॐ यद्दरमहाज्ञान
सर्वबुद्धमहरुव॥ हूं २हा २अस्वाहा। अस्यश्रीधनसंज्ञायाय दर्ष्पाद्ध्य
नायनमः॥ मिश्रोगगस्त्यकर्माणि अपविसवहरु यनमः॥ ॥अथ स्मर
कर्मेलायकं ज्ञानगत्तुविशेषणमः॥ ज्ञानशब्देन हन्न्स्ठ सामान्यज्ञानवाच्य
मः॥ देश्यादेस्य पनंद्धस्यय कांथ्वस्वचसिद्ध्य॥ नागेशगर्यक्तयद्धेश्वम
हाना। त्रिकद्धिनये॥ मनूष्यगताङ्किन्या नयक्रयच्यसर्वविद्र॥ गियं स
पारिधनद्धः सञ्ज्ञा अञ्जापिधानशान्॥ आयगआगियायूनां पृथिव्यांध
रुवचेच॥ ज्ञावचा चांगिसर्वाचिद्दशपचादिसञ्ज्ञावग॥ आधसेलकसंग
स्तु सर्वज्ञानन्नधिष्ठितं॥ अज्ञानानास्यसम्बन्धा ज्ञानसर्वगिसर्वविद्॥ ॐ
नमः यदपद्धनज्ञानविशेषण॥ सामान्यविशिष्टं ज्ञानं कीस्योभदमननग
ध॥ रुगवानार॥ विसरद्वयानां द्वियवर्द्धस्तउधपः॥ पश्चरकामस्य ज्ञान
स्य ज्ञानज्ञानगिउधपः॥ यथाकस्यसज्ञानस्य अस्याज्ञाधर्ज्ञानमः॥ दिना
निप्रगेज्ञानस्यरुयंज्ञान्ध्रुनावचा॥ गिर्यद्धभालज्ञानन अचना ज्ञावचा
द्धिस्त॥ पश्चरदनिज्ञानानां नवाणां द्विजानिस॥ यथाप्रज्ञादमकानां
वालज्ञानं उज्ञानिनां॥ ज्ञानमत्वविशेषण्य आगणाक्ष्णुदीक्षिणा॥ जन्मका
यीसरुसाशिरद्ध ज्ञानं नचादिगं॥ रुद्ध्रसाद्धिमा सम्पद्ध आगण॥ आरिल
सिनः॥ वाक्कशा॥ ज्ञादिशध्याना नगनगसमायमा॥ उकिसकि पदकाम
आगण॥ ज्ञानिसानमः॥ साधा मानाजिशा॥ ज्ञाशि आगमारस्तुरुरुकांशा॥ ॥
कूगिप्रकवलेशोगपी० प्रथमपटलः॥ ॥अथ वक्ष्यपाणत्वं च
क्रुध्यानविशेषणः॥ शान्तिपुष्टिवशानावर वज्रामलिवानमयच॥ नयका
ष्ठादिचक्रस्य वाक्कानिम्न्ठ काचयत्॥ कर्मावशानि चक्रस्य हावयदि चक्र
यः॥ ॥ ॐ नायस्तुरुाय स्वाहा॥ ॥ अस्य वीजं स्तु सर्वेषाम्प्रयामा
रूप अग्निमां॥ पाउथन्मध्य नामंतु चक्रा वाम्भाक्त वायचः॥ समगा ज्ञान

भ्यनश्रासरूपक्तश्रानयेत्॥ समगासर्वेविलीनेन कायचक्रं यथाक्रमेण॥
तावत्यात्मकाक्षेनीनारूपसर्वं तत्स्वभावेन॥ तत्रावेशप्रमत्वानां भागशावयेत
तु॥ चन्द्रमण्डलमध्यस्थं पद्मासनं विन्ताम्येत्॥ तावत्यात्मन्नैव सन्नासनमायदृश
लिनिर्मितं॥ ॐ नाथ स्वाहा· शिर॥ ॐ तु नाथ स्वाहा· चक्षु॥ ॐ तु य स्वाहा नाभ॥
ॐ अं स्वाहा· कर्ण॥ ॐ य स्वाहा· जिह्वा॥ ॐ नाभि शीर्षं स्वाहा· हृदय॥ ॐ खथागध
मानि संचिन्ता यथा प्यनिक्षा॥ द्विभुजं सत्वपर्यङ्कं सर्वालङ्कारभूषितं॥ श्र
यहस्तात्तु सर्वकर्मणं सलाभिवापतं॥ तावत्यन्मन्त्रि भासर्वमंजापवितेः
षणः॥ ॐ गानतु पस्वाहा॥ ङ्क मिसर्व नक्षर्मिकामंत्र॥ वंधनंना — भवणां
धाधाविषयगामिनं॥ जपाविविधमङ्गसङ्गपमस्सूविषादिकं॥ यजयय र
यंस्थानं गत्रमन्त्र प्रयाजयेत्॥ मन्त्रप्रज्ञासमक्षावीन पालिखिनक्षाविविखित्
क्षानयेत्॥ दध्यानकाभिद्दन कारूयसर्वेतमस्यामि॥ ङ्मिनकासर्वेषांयाग
गत्वा निसाधयेत्॥ ॥ सूक्ष्मेन्दलमिदं चक्रं निष्कवाक्षणत्र वस्तुयेत्॥ पूर्व
सूनो दिनमध्यस्य जपसर्वंरिक्षापयेत्॥ सिगवक्रादिचक्रसम्पन्ननिम्नं तु
ष्ठादयेत्॥ समनातूपसव्यिन्द्रसूर्य सर्वाङ्गरुनं॥ पूर्वलक्षणसंयुक्ता
पूर्वोक्तेन साधयेत्॥ तावत्यदस्यवज्रकंप्रज्ञा ज्वालिगकर्मणि॥ ॐ प्र
ज्ञमतास्वहूं हूं स्वाहा॥ तावत्यत्रावतावन नाभिकालमनन्दनः॥ चन्द्रमण्डु
लमध्यस्थं प्रज्ञामात्मनिनिर्मितं॥ द्विभुजं सत्वपर्यङ्कं सर्वालङ्कारभूषितं
सिगवर्णप्रशादिव्यं प्रज्ञामात्मनि धानयेत्॥ जापिनमसबीजस्य प्रज्ञा
सास्यवर्जणं॥ जठर मेधमध्यानां प्रज्ञावर्धनं यागतः॥ नवकाष्ठादिरा
गस्समध्यदशमभवच॥ वक्षपातशरिक्षाननिम्नपर्यन्तमवच॥ मध्यन्तु
श्रात्मचनस्य प्रभामा ह्रन्मूर्निमा॥ सप्तमकायमध्यस्थविन्दुना दन्तया
जयेत्॥ पादलेखनबीजन्तु नपन्मादिहिवर्जितं॥ यथावर्गद्वितीयस्सम
कमक्रमनादिकं॥ स्थापयेद्वाक्षक्षानान्तु विन्दुनादन्तु भाजितं॥ यायाक्

चनिमग्नानां च वक्ष्यथ तत्सर्वं सर्वविग्रह ॥ प्रथमं सितसक्षिरूपं द्वितीयं पीत
रावनं ॥ तृतीयं रक्तसक्षिरूपं कृष्णं चापि चतुर्थकं ॥ पञ्चमं लक्षणं संस्कारं
न्यतो समवस्थितं ॥ समागादृष्टिनिष्पाद्यं चयवयदसचक्रगं ॥ मलिनं रावं
मात्रभक्षितश्मशाना तमसं यथा ॥ कालिंग सर्वं च अग्निजाल समप्रभं ॥ दक्षिणासर्वं
मायाशा ॥ ज्ञानचक्रस्य रावणं ॥ संज्ञा च सर्वगनापि च दृष्टं वेतालदायकं ॥ ॥
समगा हृ नैनिष्पाद्य मातलकामा कासरावनं ॥ सूर्यमण्डलसक्षिरूप कालिन
किचथादिहि ॥ नसमप्रेतवीजानां ध्यानयथि च कथं ॥ यथावर्गस्य पञ्चमं स
पूर्वमक्षरनग्घोणं ॥ अस्य ध्यानरूपीतसमूलवरुणस्नानयथा ॥ अस्यनाविन्दु
उर्ध्वानां सूर्यमण्डलकामयथा ॥ अग्निजालमनन्तकं रावयतस्य समाहितं ॥
मातृभावैश्चैव याचिकृत्यं चित्तं वामकं ॥ द्वितीयाक्षरविन्दुनामनादं नथा
उथा ॥ अस्यगामाभिकनामासौ वसुलक्षणसिद्धम ॥ पञ्चिनायाभिनानीयां
यःसाध्य यानिनामतं ॥ सिंहग्रीविक्रमादि च शूद्रं बाक्लसंशयः ॥ ॥
पर्वलक्षणस्सर्वेषां पूर्वोक्तानि चक्रकं ॥ विनालास्य सर्वेषां चन्द्रमण्डल
मध्यच ॥ अस्यनासर्वविनाश्च अग्निजालमनन्तकं ॥ वर्णपीतारुणोत्तराष्टम
पकाग्नि समप्रभं ॥ श्वासाकर्षिणसर्वेषां सदस्यावत्तनमादितुं ॥ ॥ सा
धकस्तु देहानां सूर्यमण्डलमध्यचा ॥ अस्य शाक्तचिन्तस्य वायुवीजनवृद्धि
तं ॥ चित्तं च तत्कावर्णादिरूपकं कृत्वा चित्तयथा ॥ चन्द्रमण्डलमध्यस्थं ज्ञानता
किनीरावयथा ॥ पवित्र सुरूप काग्निकसर्वाहरणरक्षितं ॥ अस्यशादित्त
वामनमनसाकर्षरावयथा ॥ गर्जन्याश्च यागवालं अस्य शाक्तचरावनं ॥ द्वि
तुष्टाक्षरविन्दूनां मूलनादं नथाजितं ॥ अस्य नाभिकनामासौ वसुलक्षण
सिध्यत ॥ अस्ति स्त्रीविगतीवानां अग्न्यष्ट स्वापिचालयथा ॥ मनसंचालिगसाध्य
स्यलक्षणकनसिध्यति ॥ ॥ अस्य दलस चक्रस्य नमीवक्ष्यकुवं वक्ष्यथ
निम्नक्षास्वच सर्वेषां वक्ष्यथ विचक्रमं ॥ यथावर्गस्य पञ्चरस श्वरिचक्रा च

गस्थ्रम॥ ध्यानं चरस्याजिनं मध्यमं स्थाप्य यत्नेन अस्य बीजं तु ज्ञानिनां॥ सप्त
नादस्य योगस्य दलमध्य तु ध्यानयेत्॥ मध्वरमस्तु पर्मसूत्रे स्थिरं चक्रे ज्ञान
दलअस्तेव लोगयः॥ योगिनां सिद्धिकारिणः॥ भावयत्काम्बरनं बलं यम्भि ज्ञा
लमनकस्य॥ पूर्वोक्तेः स्थले अलेर्थकं भावयद्विपश्चये॥ पश्चात्रूपाणि निष्पा
यदध्यायाव सप्तधा न मध्य रूपं संपूर्णं कालिनां तु सर्वा रत्नगतं स्थितं॥ मध्ये चतु
कबीजस्य प्रथमांकुरग अग्निका॥ अस्य जानिमराभावानां पुष्टिकं योगसिद्धये॥
दध्याव सममगीयाग प्रहिष्कानां तु कीर्तितं॥ अपशालद मा लातु एवं संसाव
मवस्य॥ पर्वतल क्षश्रमात्मा न रत्नगागत्वं भावनं॥ सूर्यमण्डलमध्यस्थं चन्द्रम
ण्डलं भावनं॥ चन्द्रमण्डलमध्यस्थं ज्ञानविज्ञानभावनं॥ दलअष्टस्य चक्रस्य
मध्यबीजं तु भावनं॥ ध्यक्ति गं वाक्यं निम्नं तु स्थ सर्वबीजं न याजिनं॥ दिश अम
गच्छत्वाविसर्वम आलि संपूर्णे॥ विदिश नतु चत्वारि पञ्चम धारि मण्डितं॥
विनायं आत्मासक्तरस्तु पतियं संचन्द्रमण्डलं॥ लक्ष्मी ज्ञाल मनष्कास्तु सप्तपत
नवर्जितं॥ मन आगमस्त्वं स्थात्वा योगिगमस्त्वं भावयन्॥ भावयद्भावभावनानि
ष्कपनिरूपणं॥ दुर्लभं ज्ञानमस्कानां हीनपक्षाय दृष्टिका॥ लक्षमन्त्रं तु या
गीनां इमं धाम्नव वर्जितं॥ समाहितं गं क्षिविदी क्षीणा स्वरमगगरस्तुका॥ दश
दिशं गं विक्रा नमालोक सर्वं सर्वविद्॥ ज्ञानं च गादि सम्मस्य पंचचि स्तु
बुद्धिमान्॥ समाहितं चक्र ध्यानं तु समंगाचित्र बन्धनं॥ सम्भगाज्ञानं नपस्य
भसंसारपारग अस्म॥ ॥चन्द्रमण्डलमध्यस्थं ज्ञानबीजं निर्मितं॥
भावयन्तिगमवर्णस्तु पञ्चमारानमामितं॥ द्विजमस्तं पर्यङ्कं सर्वा रत्नशरु
क्षितं॥ मन्त्रा तु दीपा लोकं तु हृदिस्थानं तु पीडितं॥ सिगवन्तु स्व णा रास्तु मार्य
वेवाचनपञ्चु॥ स्वनं गां वज्रभयेस्तु सत्वमर्सानधारुक्षे॥ स्वव नगं विविध
गीज्ञानं प्रज्ञाह्लानेन ज्वालाकुलाः॥ स्वमयध्वाधिबीजस्य विसर्गेन तु याजयग
प्रथमाङ्कुलञ्चकस्य अस्य बीजं तु भावयत्॥ समाधि गजं तु योगीनां सवाधि

श्रीमद्भगवन्॥ ॥ इति प्रक्षचलयोगमार्गे द्वितीयपटलः समाप्तः॥ ॥
अग्नेकोणस्थं देव ऋषिकामकीटकं॥ यत्न स्त्रीगमसत्वानां ऋषिस्थाभागरायण
मृगवज्रयथा गतं सम्मुक्तं सात मरुणं॥ धिधिरस्ता मोहसत्वानां ऋषिस्थो धर्म
दशयम्॥ हृदयचक्रे सधिरस्थं हंकार बीजमध्यगं॥ श्रग्निजातप्रभादृश्य द
शादिस्तोकधारुकेः॥ क्रयभसर्वसर्वं मदक्षदिशान्पधाउर्द्ध्वेः॥ श्रग्निमण्डलं
विन्नु सर्वसंस्थान क्राचिनं॥ पूर्वं तु कंभसत्विरूप पूर्वं शून्यादिकाचयत्॥ श्रग्नि
मण्डलमध्यस्थं पञ्चवक्त्रास्तुचिनितं॥ दण्डलोकध्यंनाथं श्रूलिनं वज्रपाणय॥
शृङ्ग मत्स्यरूपं घण्टमेघयमिनसिलया॥ मन्दारकर्णिकं उर्द्ध्वे समाचमाय कं
तावयदस्यबीजस्तु यदिष्टं तु लोकसाधकं॥ ॥ सूर्यमण्डलमध्यस्थं ताव
थन्ममास्थितं॥ निर्भिमज्ञानमात्मस्थं ज्ञानडाकिनी रूपगं॥ दिव्यरूपं सत्व पर्मस्थं
मध्यमस्थं सहस्रारितं॥ द्वितीये विकृतिरूर्ध्वानां पञ्चरूपं सास्तुमण्डितं॥ खड्गाङ
योगपात्रां सर्वरूपं मयरूपिणं॥ नभिकालमननमास्तु वायपुरवा सनिश्चरं॥
यथावर्गस्थितीयानां ऋषिस्थिताचरगर्भगं॥ दण्डमात्रसवज्रांशं मरवसादि हि
वस्थयम्॥ प्रथमारुणऋग्नास दृष्टिचक्रचजापिनं॥ पश्चात्तु कर्ममासेस अ
द्वे स्वचलिकर्मं हि॥ पञ्चाशत्गमतुधृतास्यगणमस्वरुजापिनं॥ तापवद्विधि
नामृक्तो मो विप्रनक्रमादपि॥ ऋषियस्तुयागीनां वज्रगीमस्तु कायचम्॥
ममपमलावज्रस्तु रसर्वसलच घात्रु॥ पीतूरता श्रस्तात उरु॥ मरुसंसार
उगाचरवलू॥ नच्यनाश्रसगीभ नवक्रमपश्चारि नादितु॥ मित्थ योगमस्ता वी
धरुरुस्वाहा॥ प्रीनयममस्यसर्वंधाङ्यागिनी सर्व - र्भयम्॥ ततः धर्मा निष्कलं
यः हीनमध्यमउच्चकेः॥ ॐ योगाव सज्ञः॥ समाहितं ऋस्य योगेन पूर्वं स
वादिकाचयम्॥ सर्षपन योगीनां ऋषस्यवशिरक्षिणः॥ श्रावेशनं तु योगी
नां हुंकारमनादरीपेतं॥ ऋस्पप्रवादि मध्यगः श्रात्मस्थं ज्ञाहि कामयम्॥ ॥
ॐ मनघ २ २ द्विपि २ हुं फट्॥ लक्षमेकं जपे योगी सिद्धि वशरुति

ध्यामि॥ यं यं पश्यामि प्रजानां दृष्टिं च साधितप्यामि॥ ॥ॐ वमा यक्षं र हूं ३
हूं ४॥ सर्वदा च यचिजप्य यान्मृतास्मृश्यं य वसा॥ सर्व मायाग्निर्ज्ञापपद्यतं नाकि
चित्स्यारक्षय॥ ॥ॐ यूं यूं स्वमगाउ४ हूं॥ चक्रोस्य अहिमगुरुसेजपमदृष्टम
मं भून४॥ यस्य मरोच वजृस्य स्पगाबवसाविजम्पण॥ सूय वार्ज गमा अगश्नाः
सरक्षा श्रविष्पामि॥ तमाहि गंजापराचत्र श्रधिल्लोकमयागन४॥ ॥
चन्द्रमण्डलमध्यस्थं वज्रडाकिनि चिन्तितं॥ सर्वार्थ यनेमायक्त नाभिकालकृत
वं ग४॥ श्रासस्वासस्यश्रुयस घवेवापृष्टुपाजितं॥ ॐ ॐ प्रचवायू स्वकस्य
घृट॥ श्रुसमन्त्र जपे स्थागीसिद्धगगनस्स॥ ॥ पूर्ज पत्ताद्धिकमष्ट
त्रिस्वधिप वृधिनवेश॥ श्रूयन्वा नरशपागस्य त्रिखर्ग मवसत्थिन॥ तपानस्पत
पनदक्षमूयाद्धिवस्त्यपन्॥ नवृत्त स्वादिमानस्य वाकापीय्यस्य रवगनं॥ यंप्र
नयभिवानानांग द्धिमगगनात्तरक्ष॥ उस्वाप्नन्वगी – नासिद्धभनात्रसंश
यथ॥ ॥चन्द्रमण्डलमध्यस्थं वज्रडाकिनिचिन्तितं॥ रावयत्कालदहनमं
रुजापत्र दृष्टिमान्॥ श्रूधस्प्रवलिसंपूर्णं गस्य मध्यस्तु निर्जितं॥ ॐ वज्रडाकिनि
दिसिमकर्षय २ हूं हूं हूं हूं॥ खादितमीन मदृष्टस्य चक्रमण्डलकानयन्॥ पचि
पूर्णबलिका पूक्तमध्य नामन्तु मालिख्यन्॥ वध्यस्य श्रू– मंत्र श चक्रालतात्रजा
पनप्राक्तापं सपावकृत्त॥ स्वजातहृत्सेन माद्धस्य श्रूलमन्त्रजापितं॥ भगया
जनालिर्वाक्षिनि वर्जमस्य कर्मयथ॥ मण्डलं चन्द्राणि कर्मश सिद्धभनात्रसंशय४
॥ ॥सूर्यमण्डलमध्यस्थं धावडाकिनिचिन्तितं॥ रावयत्कालदहनया
मीनांश्च विचिन्तितं॥ मन्त्रम कादिसंगक्ष्य डाकिनी मालिधिष्ठितं॥ त्रिखण्डम
चनामंच मीनानां मुखस्थापन॥ स्थितमाजप्य पादेन जपेत गगनमष्टमं॥ ॐ
हूं हूं श्रूमकसमुखवध्यक्रीं हूं हूं॥ तपजपितमात्रेण सर्वकार्याणि साधि
तं॥ ॥श्रूपयेव कर्मवक्ष्यन्॥ श्रूसमन्त्रादियकासकाभिद्धनत्रवस्यप्रे
श्रूस्प मीनस्याकानस्य मीनानां मुखप्रक्षिपन्॥ भगमस्तक्तकानयन्॥ सस्तम

ग्रसक्षिप्तसर्वकार्याणिसिद्धिदं॥ ॥वायुमण्डलमध्यस्थं वायवीतीर
पमात्मकेः॥सर्वत्र मानिस पूर्जां अग्निज्ञानसमप्रदं॥अर्द्देसवलिकर्माहि
स्वगमध्यन्तु कावयेत्॥ गोमयं यम मात्स्यनामसमंथसुतस्थापयेत्॥ उल
स्वर तुगंमुत्र हुं हुं॥ अमुनामंतु मंत्रस्य वाम मादनपीडितं॥ सगमर
स्वजापन सिध्यतनात संशयः॥ अस्मनाङ्गपत्नीनां वलिकर्मं यवाह
येत्॥ प्रवारं कौन गायानं वद्धमूक्जानि दन्नाणः॥ ॥वायुमण्डल
मध्यस्थं वज्री गावतु कावयेत्॥ नीलवर्णं मुखो गास्तु अग्निकालसमप्र
भं॥ पवित्रपूर्णकानि सपूर्का सर्वार्थय वरदायिनं॥ ध्यानमासनमासीनं अर
यासीत्तु देवी॥ अर्द्देसवलिसपूर्णगतकर्माणिकावयेत्॥ पिष्टिकादि
विशेषयत्समा ज्ञानकावयेत्॥ ध्यानवामनमार्येनाममंत्रस्य अर्ज्जितं
अर्द्दिसवलिकर्मन्तु गन्धकर्मादिकावयेत्॥ ॐ ज्ञाक्षेश्वरी हुं हुं॥ सुगम
स्वस्वजापनतु क्षानिक्षिपेत्॥ अर्जिनकर्मेणयाचनासपीयमा॥ अवाहि
द्विकर्माणितु द्वगमाङ्गः पूनः॥ अस्मनाङ्गपत्नीनां वलिकर्मं यवास्येत्
॥ ॥चन्द्रमण्डलमध्यस्थं गावयदमनाङ्गकं॥ सर्वनार्यादिमालम्पत्र
यत अस्मनाङ्गमः॥ विकसद्ध्वक्षपूनस्य अग्निशाखानमध्यमा॥ नकावर्ण
प्रदादिवं गृहंतु चिन्तयेत्॥ कायश्वस्य अमृतेपत्तु अस्मनाङ्गमचिन्तितं॥
यात्मेयगसमयाः स्थितिरियं गतं ॥ ध्रुवणसर्वसंकान
मंगवल्पवमंदपः॥ अस्मनाङ्गपत्नीनां लयकार्यादिकावयेत्॥ ॥
कामिकाच्चस्पैव तु न्मरुपञ्चरमणिका॥ मेनयन्त्र लगनन्तु नव लं
नगवयेत्॥ अस्मनादकमंत्री गाजि क्रियस्वादयेत्॥ जन्मस्थलवलय
तु घेन लक्षान स्थापन॥ । अपग्निमन्त्रन वस्तुसर्वाङ्गिन सेवे कान
येत्॥ नागेन्द्रमलिकास्य नवमेलनक्षालयेत्॥ वलिस्थानतु कावस्व
डाकिनीहृदयमन्त्रितं॥ अजरन नगवकानस्य सगमपूर्णजापितं॥ सामा

नवलिकायांसुचत्वेम त्रकारकगथ॥यसकुजोलेपागपसर्वताक्तिनीय
स्पन॥ ॥उत्कृष्टलगदीपं कुभ्यगानांपयकावहू॥मीकुछ्यनमः
लाख्यकाकपङ्कोनलघयतू॥ॐ दिलिजावअ्रम्कदरंलू॥दयदकानि
नाम्नालिखदयलात्सुक्रेथ॥नपयजाधमायस्थं अद्देसवलिकानगथ॥ॐ
कालिजावअम्कसाहितिनवज्र लिस्मनवअँलरुहं॥मुगमकदुकर्णः
पशीपुवत्कालिपर्वेनं॥अदेसवलिपकोस अरिधंकदुनागिकागथ॥
॥ ॥श्रीमुपकवलपागयी॥ञमीपपदलु॥समाप्त॥ ॥
कोस्मलंश्रोतुमापन्नअद्दययागसावनथ॥सकुञ्ज्दयवाक्वानाकथंया
गतुमावथ॥वर्णवज्रयधसम्बधअद्दयायागगखगथ॥वज्रमथुंचमूत्रं
प्रतिगृह्णामिगवगथ॥वज्रगवनमास्वानपरमधमेगक्षाविधी॥मद्वानं
पृथ्यागस्वउयायंगस्वतीयग॥आदीनावलुविशुद्धिकानयतू॥वज्रोज
लिहदंवद्वासत्वानकमदेथ॥खरावशुद्धासर्वधर्मास्वरावशुद्धासं॥वज्रश
द्धासर्वधर्मावज्रशुद्धाहं॥यागशुद्धासर्वधर्मायागशुद्धोहं॥यासकायालद
विनिर्मुक्तंयानयाकावदापयतू॥साग सम्पन्नचित्तरुस सर्वस्यादना
दिवतू॥मीलपजलउशानां अस्यं सर्वगतथ॥अहिंसाजन्तुमादीनां
मास्वसत्वानपीतिका॥कानिशीलनिभयस्वगसपीडानिबाधथ॥
पकासाकालप्रकालं उत्कृष्टादयतू॥नमाथानचमम्स्तआलचग
तुवन्धयतू॥वचित्तस्यमनंयस्वकूनमावखपीयग॥समगाचित्तस्वत्वं
नमालिप्यचतुयचा॥धातीचन्दनदसानांसमगाह्किणचगना॥कामापू
पसत्वधागीनांप्रकावदायपतनथ॥खरावशुद्धसधूपससमगाधूप
रावना॥एजादीपनमावाक्कगावका॥यहपावकेथ॥हन्नभगसदीपन
आलाकसुच्छ्या॥अनात्वासादिस्वासत्स्यअयदानचगना॥ववितसेव
याकाय॥पूजाकालविलेपगग॥मनोनकल प्रदेतमूनिमयसरवमासन

वज्रमालाविनिष्पन्न पद्मपुञ्जविनिर्मितं ॥ समदृष्टिप्रमाणेन पीठमासनं
मण्डलं ॥ हृदयस्थं हूंकारावानां शून्यतासर्वसर्वविद ॥ रूपं यस्यास्त्वं तमा
कारं सर्वसंस्थितं ॥ पूर्वलक्षणसंपूर्णं संशानां भूमिचन्दनं ॥ मण्डलाग्रं तु संचि
न्त्य विमानं स्वच्छविस्तरं ॥ चन्द्रमण्डलमध्यस्थं रावयवज्रनिश्चलं ॥ सूर्येन्दुक
सवज्रस्य रूपाणि विंशतिदेवता ॥ तस्मिन् जालमनन्ता च हूंकारं बिन्दुनिश्चलं ॥
वज्रसत्त्वादि रूपसम्पन्नमालाविनिर्मितं ॥ न्यस्य शुक्लवर्णमासं हूंकारं चक्रमध्य
वद्धं ॥ हिमकुन्देन्दुवर्णं सपञ्चवक्त्रादिमण्डितं ॥ द्विभुजं सत्त्वपर्यङ्कं सर्वा
लंकारभूषितं ॥ महामुद्रा हृदि स्थित्वा रावयत्परमं पदं ॥ हूं बीजं वज्रमध्यस्थ
रश्मिजालमनन्तकं सदा ॥ रावयन् रावयन् रावेन हूंकारध्वनिरक्षितं ॥ ज्ञानयोग
ज्ञ पद्मयोगी च प्राण्यां लम्बनकं ॥ सत्त्वार्थयोग मन्त्रं गगनकाञ्चनसुप्रभं ॥
गत लक्षणं शून्यस्य पूर्वलक्षणमालम्बनं ॥ चन्द्रमण्डलमध्यस्थं घण्टाम प्रति
रावनं ॥ एकविंशतिदेहानां पूर्वलक्षणसर्वविद ॥ हूं बीजं रूपसंस्थैश्च त
श्मिजालमनन्तकं ॥ नवनिधाय देवानां प्रज्ञापारमितालम्बं ॥ द्वितु
जं थागपर्यङ्कं सर्वालंकारभूषितं ॥ वर्णं लपक्षयोगाना पञ्चबुद्धांशु भ
णितं ॥ शून्याकारसदेहानां शून्यस्य जं तु विन्यसत् ॥ महामुद्रादि दीपालो
कं वश्य सब भापदं ॥ ऊर्ध्वं भूतिकालितं तु नमस्सवीज ज्ञापयत् ॥ नागव
राधिवर्गस्य गगनकाञ्चनसुप्रभं तु ॥ सत्त्वमुद्रा चलिङ्गसमालिङ्गनमगया
नन्दौ ॥ वज्र अंकुश अग्र सम्मन्नगाङ्गर चिन्तितं ॥ दश यज्ञा महाराग तु ध्या
नयेत् ॥ शून्यादगरिस्थानानां शून्यता सर्वसंस्थिता ॥ चालप
नस्य गर्जन्ता श्रवणस्मृगान्वयं ॥ देवालिङ्गनमस्थिता सर्वामुखादि स्था
पयेत् ॥ ललिताक्षपद्मानां वज्रपादेन पादयं ॥ वामस्य पाद उपद्रुत द
च हस्ताद्वि पाशिनौ ॥ गजा च हस्ति गरावन स्पृश गीज्ञानिपीडयेत् ॥ य
च पाणि द्वितस्य जपबीज वयनं तु ॥ पूर्वादि दिगादि भागं यं सत्त्वानां पार

मासद्दसनां आसस्वंछालिकावयग ॥ सत्वार्थं सुखवृद्धीनां वस सर्वत्र माक्ष
गा ॥ ब्रगी वर्म्मी वह्नानोनां मानिकर्म संजायग ॥ गाङ्गीचय नवयक्षं पौष्टिकं
कर्मयुंजयग ॥ वेश्य शूद्रां च सर्वभावसम्प्र मादियं इत्यग ॥ चर्मिकामान्सिको
मीनां मत्स्यचानवक्री ह्रिंग ॥ चण्डाली वज्रेणी लङ्कीयागहि चित्रकभगा ॥ नस्मा
सर्वप्रयत्नेन यागः ॥ श्रुक्षधीयग ॥ ॥ रूपवेर्वक्ष्यं यं वक्ष्ये सत्वमूकाव
गपद ॥ क्षयसंतनमाक्रपगत्वमरूणवध्यग ॥ ॥ समपद ॥ छिन्नप
द ॥ मण्डलपद ॥ त्रिविक्रमपद ॥ कूर्मपद ॥ आलीढ्यपद ॥ प्रत्यालीढ्यपद ॥
ञकस्थाननिषण्णपादविक्षेपश्च पाकार ॥ अंजुपीडन ॥ संमर्दन ॥ संम
स्थान ॥ कालाग्निहृदय ॥ सिन्हासन ॥ मकसंघ ॥ अष्टादशस्थानकपसपूजा
लेख प्रयाजयग ॥ सत्वश्ययग सर्वयागीनां तु विचक्षग ॥ हृदिपीठस्
पादसंलय ॥ प्रत्यामालिनय ॥ सुवालिनय ॥ तत्प्रवेशक्रण ॥ ज्वालिंगन ॥ श्र
क्ष्मीपादयथ ॥ तकस्य अन ॥ अंगसास्यन ॥ विद्रमालन ॥ दशलिनम्म क्षेत्र
शृगमालमिमानन ॥ विविधवर्ण सम्यनगस्य कर्मणिकाय ॥ वज्रय
संचमूलांचप्रणिरक्तामिगत्वग ॥ वहिगा वज्रगुह्यानां घण्टा वक्रीयशीरूं
तं ॥ नहिमा घण्टवज्राणां वज्रसमाधिरूनगथ ॥ वज्रपञ्चपरमज्ञाववमालय
कपालमंसृत ॥ रजमायवजु वैकला चन्द्रसधिन कोयसथ ॥ गगथवज्रस्स
घण्टसंसमगासंसज्ञ सुखा ॥ आलिकालिप्रभावार्म्ममहायोगेन साधका ॥
आलितु वज्रमिस्माइ कालीना तु मथा गगी ॥ आलिकालिप्रयोगेन सर्वकर्मा
णिकाचयग ॥ सत्वार्थं सकलं चैव निष्पाय द्ववरूपगथ ॥ प्रज्ञामपायवाक्या
नी रूढ संमाचमलैन ॥ सुरवावाक्यादि च ग सम नय गसदर्शिन ॥ गवकंय यं
महायज्ञ गोप्यगोप्यानि निश्चयस ॥ यमाग्रागमंज्ञात्वा तु नगायागी प्रक्षी
र्हिगा ॥ शुद्धस्फटिकवित्रस्त समस्य धर्मसन्दर्शनाग ॥ यदिसान्मनवि विधिक
त्वा अवी आत्मनगक्रशाग ॥ नस्वकाम तगाचैव नतुयत्तेन प्राजयग ॥ न

स्मालम्बमत्वं न सत्कार्थं क्रियस्तुना ॥ यादिकामयमाथागी स्मायमन्दल
कर्या ॥ सरवसमिक्षं वस्त्र ॥ ध ॥ यश्च ॥ रुद्रादिआगमथ ॥ उद्दिमाकारनिम्पम मा
लध्यागमरूरवस्य ॥ अनमांग्रहमध्यस्थं अलिवीजवभायपर ॥ अलक्ष
निमेथागानाहूँ लगजपगरलं ॥ पादिविक्षिरकायमाथानां दवका भाग
लायण ॥ अजलासमंदीसमन्यागयागीध्यंवश्रां ॥ पिनि दद्यप्रकादपमा
कंवेग्रीत्रगन ॥ अलाधमंवयमार्गअलासंतान क्रदक ॥ अलमिक्षमदया
गअत्रविलमयथागिनथ ॥ नमिथिनवनकोथभामवासाविधीयण ॥ सरवमा
धमनिम्साद्र सरवसंसायक्रमक ॥ ॥ कर्मयक्वविधानत्वसाधन्काविं
विधमम्ना ॥ यंद्रमण्डलमध्यस्थं वगालीअपनिर्भिन ॥ तस्यअयानिसंचिन्त्य
लामयरूलयर्व यश् ॥ जपल्लकस्कामनीमथ्यालकर्मादिकायथथ ॥ क्षित
ना ॥ कयविन्दु नामलनादनथाकयर ॥ प्रथमाद्रनअपानामलिय कत्म
वयश ॥ जमध्यागश्रिआगत्वकर्मसाध्यनिगलयथ ॥ अगवस्त्रालिसंगष्क वि
भिजंसिधिनदवनी ॥ क्षिअजललिगसाकपंसिगपीगकुराकालं ॥ अदहासी
कवालाच विन्दीर्लक्षभगष्ठिनं ॥ अगमासनमांसीननयचमीरिध्या यणं ॥
मक्रनमाघमिक्षितुसपारत्वगदप्रभिनं ॥ निवमनंनरलिचर्मथरवद्या रुद्र
क्षिलोकयथ ॥ वाभमम्भदमालकु रूकानंनादरीघसं ॥ अथि ज्वालमकादि
यंअस्मसिंधिन्नलावयश ॥ यभिमथ्यादिशायस्य साधयमविपकणथ ॥ प
र्यलकगसंयूक्ष अदेस्यवलिपूर्वक्षथ ॥ मध्यअपिंतुसंज्वालसंरुधध गम
प्रिवश ॥ समिध्य दयदारूणांपश्वरक्रीयादिसंयुनं ॥ उदानाविधिधांपूजां
मलामांसादिमारूगि ॥ अधिनामधय्यकासमगमक्वालियारूगि ॥ नमालभि
ममाअसनिमि रूक्मण्दर्शायश ॥ ॥ ॐ स्फ्रूं हुं फट ॥ मलमंत्रथ ॥ ॥
सर्वयूक्रादिपरयवत्र ॥ प्रथमन्चयमलभिद्वितीयं परंदम्पण ॥ तृतीयन
मलाग ध्वज कुर्यात्सिलनाय्कम ॥ पश्चरमनमलायस आवश्मिंलमारूनि

धावनूपीकवालीनां नादर्शिपिन मूर्छितः॥ समयमूढाहिसंस्थवति श्र
गादिश्रद्धेयम्॥ उमीक्षुत्पधाह्यान आसनं भूनूयालन॥ गगदर्शनं दृ
दवमीव स्मकिंमैया साधस्वरूपं कीदृशी मेया॥ श्रूपयागिना समयदापय
मूडास्मश्यम्॥ सिधदयि महास्मान ममास्मिन्सांउगं भूनू॥ उँ मिष्ठ म मद्
नू हूं श्रुजङ्खाघु॥ भिवसिलंदयाणु॥ श्रसमन्त्र मस्वयतु॥ मान्म शुधिन द्
स्लाघ श्रुदेस्मवलिशक्तिनं॥ दानयप्रभेन मानननिस्मकाय प्रभिष्ठितं॥ श्र
स्नीनागिनीलगी दवक्कनाउयक्षिणी॥ गन्धर्वीकिंनरीउगीमानुषीयदि
मीप्सितं॥ श्रानीमशीघ्रमाह्यमिकिंपूनःश्रूद्रमानूषी॥ आह्वाप्यापि गमात्र
श श्रस्तनानागमातस्य॥ यमीस्मपि श्रसर्थानां मीघ्र मनन्तुमानयम्॥ माः
चायां यसशत्रुशां वाटन यस्माह्वानम्॥ सर्वकर्मकवाश्यी साधिपं विच
कथथ॥ याघी शिवी उलद्धीनां मस्मकर्म साक्षेभ॥ किवीदवी साधगवि
चक्रगथ॥ याघ्री शिवी उलद्धीनां मस्मकर्मन साधना॥ सिद्धिलभेव वाघ्रम्
साधयद्विविकर्मयथ॥ वज्रयज्ञ स्वरभूताश्रप्रभिगक्कामिगत्वमथ॥ वज्रग
त्वेनथाकंयं घश्र्वधर्मयदवनी॥ चयमूकामनत्रागां साधय सर्वथागवि
नू॥ ॥ श्रूमिषकव लेपागपी०४ समाप्तथ॥ ॥ श्यूवज्रय
थामार्ग संमानपावलुकणं॥ आचार्यस्वरूही ध्यामिम मन्त्रयागादिमूवक
रगवक्कनेउस्यम आचार्यत्तमकीदृशं॥ कथमाचार्यप्रथाकप्यतत्र स
कृगिक्कीदृशी॥ वज्रपालोभन्नमत्व सर्वसं वाधिलक्षणं॥ सर्वत्र दृस्य का
पसशाश्वगावस्पवल्लितं॥ अविहगंसंधामानाकृलपश्चशद्विलेखवं॥ ला
क्रिकापादयी०स्मवभ्शितक्काद्वियक्कंदं॥ एवंयुक्तयमयेदहतुस्ब्मनिस्प्रया
गिना॥ यश्वलक्षणप्राक्तप्स ज्ञानीनांश्रयलक्षणं॥ विनीनाशाकथंअनुस
वंसखालय प्रदृ४॥ मन्त्रमन्त्रप्रयागश्चयागकलसकलादिवा॥ माक्षयेवाक्क
मर्थय सर्वसलभूप्रयम्॥ दानादिलिवमानिस्पयागध्यानादिगत्सत्र ४

ह्रस्र वाद्यं आह्नमात्रुकापुण्या हिरंच नमः ॥ समन्ताचिरू स्मर सन्त सत्वानां
नाथ कुरु स्वं ॥ दर्शनं गतमनिसाना आचार्यो सोसिभीयत ॥ ॥
अथ पद ॥ धूप न रत्न निमित्ता आचार्यं कर्मं यत ॥ निरूसा आचार्य स्वानां धागि
नीयाग दयत ॥ सेम आवाने वस्त्र वलि ढ्का दिदयत ॥ अधीशी पन
गर्भी सर्व यासमथ नउ ॥ सर्व्वानि स घर्माहूनां स्वत्वश्रा पशगगन ॥
स्वाधालं धेन कानं सुस्रभ्यांग समाह्व ॥ गम सर्व स्त्रकाल सूयल्लापी
उरुव नगन ॥ अर्थ हा निश्रिया हूवमान इरु न पीयत ॥ स्वाधालं धेन का
नास्य पञ्चरत्न काडि दर्शयत ॥ नसुधाल नसंयुक्तं कर्मस्त्र स्वामि सिधगि
मक्वालि सरु संयुक्त अ स्वाकवा दिश्या पयत ॥ अ देवामता लि मरु दत्त
स्य धर्म संज्ञा पयत ॥ याग नि मरु युक्त सज्ञान विज्ञान दर्शयत ॥ आचा
र्य भा लि सरु तु सर्वत्वकादि कथ्यन ॥ सिघांगं अधिनाय कवशीघ्र स्त्र
स्वासंगं रत्नादकिंगजान मउ लंघ थिमा प्रतिष्ठा प्यस्वंगकनप थंज
सथ्यवल्किन ॥ तवाआसनमासीन दयना स्वगमाल स्वंथ ॥ पीलोपा नि
संगस्य त्रि ष्या स्व प्याधि चक्र ग ॥ बुद्ध धर्म जरसंघ जर गव धंग स्वामि निस्र
स ॥ त्रियान स्या लि सर्वेषां सामानन्द मीन अरु धर्मक्रियापदं ॥ बीथ ध्वी
द्धी बोधिसत्वा महात्मन ॥ विलोम गत आचार्य्य गयधंग स्वामि गिस्रस
॥ अमीरंगनायेषिष्यामि अमृक्त भाच याम्यहं ॥ वर्तमान न दमीन अ
रु धर्म क्रियापदं ॥ एवं द्विवपि त्रिवपि समन्ताचिकु नउक्त वानु ॥ स्वभाव
शुद्धा सर्वधर्मा स्वभावशुद्धोहं ॥ वज्रशुद्धा सर्वधर्मा वज्रशुद्धोहं ॥ योगशु
द्धा सर्वधर्मा योगशुद्धोहं ॥ कायशुद्धा सर्वधर्मा कायशुद्धोहं ॥ कायेन त्रि
विधं चैव वचसा च चतुर्विधं ॥ मनसा त्रिप्रकारेण संयमं कायन क्रि
यं ॥ समन्ताचिकु ज्ञानस्य पञ्चाक्ष धर्मदंशयत ॥ नग वज्र प्रस्तावयचरु
णं वालिलमादि निवेशयत ॥ पाचि संलग्न हल सग गणिष्यादिका

श्रयहं ॥ सर्वदुःखमयं कायं आचार्यशरणं गतः ॥ वीतवीतरागजस्पृथा
गपीठनमाम्यहं ॥ शिष्यमुख्यं पदमार्पणयाद्धिसिंह ॥ यागाभिधानपद
कर्पटच्छेदनार्थं ॥ हस्तमुद्राश्रयं शंगजागदृष्टि ॥ सिद्धस्तुत्या गपदनमा
र्थस्मरणलवाजनं ॥ अकारादिसर्ववर्णाश्रयावाग्वं मिथिष्ठितं ॥ हकारं दह
नज्ञानं दृढं दिव्यं मिथिष्ठितं ॥ शकारं कर्मविनाशनं कायवज्रं मिथिष्ठि
तं ॥ संसारपापदहनं स्वज्ञानवज्रं मिथिष्ठितं ॥ पञ्चशब्दगतसूक्ष्मसमया
दक्षयादनं ॥ हकारं हृदयगतं ॥ शकारं गन्धनाशनं ॥ जीकारं वीर्यहन्मार
क्षाचिन्तनं स्वाहान्तं ॥ सचन्द्रदर्शनमाज्ञानिपञ्चास्सर्वबन्धयहं ॥ आत्म
कायस्य दहनं तथा गपीठं पापनयहं ॥ अर्थनिरूपमहत्त्वं लिंगस्य कीर्त
त्र्येनतु ॥ यथायसंहृस्य दाप यथाविचक्षणः ॥ एनसिकाद्धिकार्य य
थाक्रमनाशिकिनां ॥ तथा चरनमूलं तु शिवनस्यादियाचयहं ॥ ॐ पञ्च
ज्ञानिनी पूजापल्लानाया स्नानं निर्याणयामि ॥ ॐ सत्वानां क्रियायामस्
आत्मानं निर्याणयामि ॥ विसर्गजाधहकारं पारम्पानिस्थं च ॥ विसर्गापा
प्रमितस्य हिन्सा सपद ॥ विसर्गसर्वनागानां संभाषं नियमात्मन
ः ॥ विसर्गवाक्यज्ञानानां नगरं गसभापमां ॥ सम स्वसमे तु उ ॠ आ आ
आँ इं जः ॥ वज्रमुद्रादियुक्तस्य समागबीजधारणं ॥ आत्मसर्वपुष्प मन्त्रे
षु संबाधिक्रमदर्शयहं ॥ नभाद्यदृश्यात्वितपलवनिस्थः ॥
आत्मपत्नीचपूर्वाणां चन्द्रेश्वेमहत्वाभिकः ॥ हरिः अश्वगवादीनां गहक
जस्यमंतवान् ॥ शीवर्ण्णवजैःगात्रवस्त्राद्धिश्रीहिधानमुक्तः ॥ गस्थानिस
यमाहृतां क्षेत्रा स्थानात्युगवान् ॥ अनामात्मदहस्यतपादक्रियादाप
यहं ॥ स्वराववृत्तिधर्मस्य स्वरावर्णा अरावगतः ॥ नासिकावस्वरावससंधा
धिक्रमदेशयहं ॥ क्रमापूर्वस्पृहस्य धर्मस्य नतु सतस्य पीडयहं ॥ पा
पुष्पपत्रपालामानिस्पकालं मरवदस्तो ॥ शीलसमयपङ्क्तौ आहिजस्तुमा

दिना॥ नयुधाना गहिन्निस वनं मरस समागमः॥ पनउम्या निरुमीनां नः
स्तल गजलिना म्रियस्॥ गुस्सालवनसर्वां नां रुवधान प्रपालकेः॥ मेषा
नक्षिनयागीनां त्रस्न लक्ष्मादिकर्मथां॥ योगा सावदु यागीनां मृषागस्स
निवियण॥ संयमी नापि संयमरवाय गजने॥ सनथनगिक्रीतास संय
मवलिकालगः॥ सर्वमा या ध्वसिध्वग यागीनां गगिकाक्षिगः॥ यगास
वेङ्क स सर्वम् स्कोस्लदर्शयग्॥ समगारूनन निष्पाय समसर्वलि
दर्शयग्॥ ससागानिगा नार्यालि यागध्यनानि गस्यनः॥ दानरक्ष्मा मध्ये
४सत्वे४वा निस्कलयद्धगि॥ गस्स श्रस्रल प्रक्षस्य गगिमागो लिनूध्वंगि॥
स्नगश्रालय दृहानां खर्गगृगा दिमी स्मिगा॥ नगिक्री उस्सगामीनी पगनं
निमगालनः॥ चैस्पकर्मेन सर्वीग नच मूल कवाचनं॥ हस्लम्स्तानवश्री
यागनमंथाकवनंजयग्॥ सस्रतं शनि शास्त्रा शिस्नागमं नत्र सर्लेसं॥ श्रः
नार्थेसस्तुमार्गे नदन्तेशगविचक्षणः॥ श्रासध्वपनंध्व श्रात्मानं दव
मूरूमं॥ श्रास्माविश्वमसकानां प्रमिविश्वादिक्केलस्यग्॥ ॥ छ॥ गिप
मनलेपनपी०ञ्ञ कपी०४ प्रथमः प्रकयमसमाप्तः॥ ॥ छ॥ गू
कग्रप्रश राजा प्रयागं गनत्र सर्लसं॥ स्वार्थनर्यागि मत्रीनां जूगतीलव
वर्द्धनं॥ श्रीउक्कासन्न दरूस्यदर्शयध गलिमान्॥ कः प्रणामस्य यागस्य
मत्रमत्रादिकी दृशी॥ कः प्रमाणस्य दरूस्य श्रा पनजागिवाधूना॥ कः प्र
मागस्य यागीनां वलिकर्म प्रदर्शयग्॥ गगिमासा ध्यक्षनात्र प्रमाणक
थलक्षणं॥ गस्रूगत्वयथा नक्षप्रमाणं दरूचगस॥ मूनिस्समालध्या स्र
निवलिकर्मादिजापिनं॥ मगुतनमनिमध्यनां मूत्राद्धपादिपूजकेः॥ स्तलं
प्रामसंयागीनां पगमनां रूपार्श्वं॥ वज्रपाणि महा॥ चगनाक्षन उरुस्
प्रमाणयदिगस्यच॥ प्रपन्नेगरवादीनां संसयजायमनव॥ भगप्रल्क
तसंसारवगपकालचिकित्सया॥ स्वच्छज्ञानस्य श्रा रूपा खगगावायूगि

५१

चर्यंम॥ रूपां रूपस्य च गानां समाभालस्यासि अमि॥ कामदेयादि कामीनां छ्
क्यातुक्षितनिमसुश॥ उगत्संसाजमानृध्य स्वरूपादिसिद्धामि॥ नसमूसार्ध्य
यल्लनि संङ्कपथ्य गवृत्तधरु॥ गानिमासाध्यमयागी विज्ञानसहस्रापम॥ तंस
यच्चगरायस्य रुगमाकथगगग॥ धनविसलरवयाव श्रूसानसानन्धीदर्थ॥
श्रोत्रसंदर्हदर्हस्य नच पीडा सर्वीयजश॥ मनानम्म प्रद्वेरावस्यादि स्लान
लक्षगं॥ स्पर्शिकाकायच्चगस्य स्वदायचनजयग॥ संपर्दाविसयानातुरुयर
धमानाहि च्चगसा॥ धनगस्य रवलाव निर्वाणसविसामृद्धिनं॥ यथास्यनंतथा
कामं पीडथासिध्य पृत्रवश॥ नसमनक्षेत्र ज्ञानयं विज्ञानलक्षिविषया॥ श्रू
वर्णसर्वं जगत्त्रूपूर्णं रुक्षादहिनी॥ श्रद्धपसर्वं रूपी च श्रूदीर्घजलभय
च॥ श्रूरावं सिध्यमप्रद्धिगलभवत्तुच्चगना॥ नतुलक्षणं च्चगस्य सर्वलक्ष
गदायका॥ श्रूरावंरावनारावंरावनासापि लक्षणयग॥ रूपलस्नादिमध्यस्य
च्चगस्यात्तविचक्षणश॥ मालन्यसर्वसर्वं शथागक्षायानिचामयं॥ गरुाधरस्म
हागरूविज्ञानंज्ञानगरटगश॥ भाग्यापा भदिगरुथामांगरुानांविषंलरूम
नश॥ लक्षलक्षणगतस्यगर मार्गेन दर्शयग॥ ॥ च्चगनासदध्व
स्यनच पीडासमीजगश॥ मनानम्मप्रद्वेराप्रसाधयगविचक्षणश॥ श्रूपी
डाच्चगरुगस्य निषधस्यरवमासनं॥ सत्त्व पर्यङ्कसंगीन कायावीयक्षसुव
गश॥ चक्षू मध्यगिनासानिश्वासानां नागरूगया॥ समार्यंवसर्वथांमस्थ
लाकाय धाजिंडं॥ समनाचिरूयत्नस्वरावगतु शुद्धनश॥ मनागक्षन
मात्निप मनमूर्ध्वमयजयग॥ वृराचतुध्यपन प्रज्ञादीपन ज्वालयग
श्रूदगावलियनालो सर्वकर्मधरक्षलेश॥ पीगवरूप्रराज्ञा रूपाकंद्वि
गुणाक्षरं॥ धार्यीयकसंबीजस्य गुमाधाय समचिन्तिग॥ क्षयगसर्वरूपा
नां घसुश्रूक्षरमंत्रसश॥ तन्मना पूर्वीजानि गिश्राग्रप्रालेन्द्रियनत्त॥ श्रू
म्गाबीजमन्त्रनां जिह्वान्द्रियगूयधावगं॥ सिंध्रिनी हृदयबीजस्य रसं प्रसा

नमस्तक्षिण॥ आद्यैन्तीकूट्टवीजसउत्तसर्वसक्षात्तयम्॥ जम्बुकीकूट्टवीजस
त्तदिस्थान पिक्षात्तयम्॥ मर्मसन्धिन्तु नाशाना षस्त्रीजनचिकिण॥ क्षात्तथस्
स्त्रीजस्स अष्टदवागिमुन्तिण॥ गस्सवर्णादिवीजस्स जलिनासर्वदहिना॥
द्रष्टार्द्धदयसतकृष्यादानन सवयम्॥ कीर्वादस्कानाम गाधानाव सर्वविकार गा
यसहक्ष॥ उस्सावयमन्यूस॥ जिह्वा सेदनम स्पृउर्द्ध अस्मनं मूलानि जिह्वा द
क्ष॥ लंता गउर्द्धनासस्सकर्स्यपक्ष द्वयनन्तु॥ सर्वमाला त्तवस्कस्स राजकर्षिण
धाजयम्॥ स्तपणार्थन्तुवीजानां हूंकान मनमभूवन॥ लापय अस्मनमस्थना
भेषालं वन्तुलीयण॥ लम्बकेर्या गक्केवीजे॥ सर्वयत्राहि कर्षिण॥ अणा पस्थन
मूलस्स पार्श्वे लक्षण त्रिपा॥ कालथजाग्निपादस्स सर्वमत्वा दहन च॥ अस
अस्मनपादस्य गवाक्षी वन्तु लीयण॥ कर्षिणी मकक्षा वन्तु नवघानारिस्थापथ
म॥ अस्मना परिजानानि॥ भवीनासर्वसंस्थिन॥ गस्स भागा निकलानि मूलपा
यसर्वदहिना॥ हस्सध्वचन्द्रका शवसर्व ताक्षीत्तनका हिमानम्॥ हिमकूटे
कुसंकाभसूर्यवेन्दुमक्षसमान॥ अस्मना सर्वविमात्रे॥ ज्ञात्वा मूडण॥ शीम
लेपा॥ स्ववमकृत्व सर्वघानपूर्स्स विवर्जितं॥ वस्थय सर्वे सस्थानं वस्तु
मस्तुलपार्श्वमं॥ गवाक्षीवंकूउर्द्धन अस्मनांस्थाप्यानि स्पस॥ तावयस्थान
दस्तु रूपवर्णादिकानि मान्॥ तावयशावयावन निष्कर्यं निरुपद्रवं॥
हृदयवन्द्रयस्सवीजकृष्णमाहृन अणिमा॥ समाहितंजापनावन सिध्यण
नात्रसंशयः॥ नउर्द्धवगिरक्षानामिद्रियाश्चैव रूस्कन्दा॥ वर्णपूजनमकका
नारूपणजानयस्य॥ जनाविसमनके॥ भीगउस्थादिपीडिक॥ नवप
कुस्थिगर्भाय अङ्गस्थानन स्थानिना॥ अस्मना मूलमालस्य अङ्ग लोत्पत्तिसं
लव॥ वृद्धभागस्सगस्स नरूपस्थानाम हालमन॥ गस्स योगानिमासस्सअन्म
भेलादि वाग्रिम॥ अस्मनांथ परिजानानि अस्मना स्तलपायक॥ ॥ क्ष॥
उमिस्थानन्त संसारयावलक्षं॥ अथ मस्तविस्थानीनांकथमाहृ शिव

मना॥ अथ तत्त्वज्ञानं तत्त्वं नष्टं दृष्टा यत्र चेतसा॥ ज्ञानं यमात्मरूपं तु नागः
स्पर्शमत्तार्णवे॥ अन्यत्र ज्ञानं तत्त्वं न गर्भे नासागमागमान्॥ ज्ञानं तु नाम्नान
यो ज्ञानं स्फटिकाकारं रूपहीनं॥ निर्मलं सं स्वरूपं च वरा विज्ञेयं तत्त्वं च
र्मज्ञानं तु विविक्तं च॥ स्वरूपं तत्त्वयोगिनां॥ रूपं तु दृश्यं तु स्वरूपं
यन निर्विकारास्य ज्ञाना॥ चिमात्मानं यथा॥ तत्त्वमात्मरूपं च ज्ञानं सर्वदा च कार्यं ग
न॥ समगाचिरूपं स चन्द्रपादि ज्ञानं सर्वगं तथा॥ तस्य मध्ये तु सञ्चिन्त्य इत्थं
रूपं मध्यमध्ये च॥ ज्ञात्वा कालिप्रयातानन्त समभ्यस्य तु रूपं॥ चिन्तयेत्तथा
ज्ञालानां तत्त्व बीजं तु तत्त्वं तथा॥ अनन्त तस्य बीजानां आग्रे ज्ञानानिलात्मकं परं
मध्याह्ने ज्ञानमयं तु संपूर्णं रूपकानि ते॥ स्फुरन्तं पङ्कजं संपञ्चादि स्तोत्रं धारा तु
श्चेत्॥ प्रथमा ह्रस्वकान्ता ज्ञानस्य बीजं तु आप्यते॥ यथा वर्ग स्वरीयानां हरि
वक्र वर्गस्य॥ दन्तुमा तस्य वर्णानां भवत्यादिति नम्यते॥ जपध्यानस्य यो
गिनां समगाच्चगनं तु॥ तावत्थ तावत्तावन्न निष्कम्पनिरूपकं॥ गगनं
रूपं निषादिमात्मानं योगध्यानादि तत्त्वं तथा॥ स्फुरन्तं भासि विरूपार्थस
पमा मानस्य गगना॥ निस्पन्दगगना तावन्मात्मानं योगकामगं॥ ॥हृ
दिमण्डलमध्यस्थं ह्रंकारं परमं भवे॥ कथ्यते सर्वसर्वेश पूर्वलक्षणसर्व
विन्॥ मायूमण्डलमध्यस्थं चन्द्रमण्डलचिन्तितं॥ तन्मध्ये ज्ञानबीजं तु ज्ञा
नजाकिनीमात्मसंस्थं॥ चन्द्रमण्डलमध्यस्थं परमानन्दमासिनं॥ संपूर्णं ज्ञा
यदस्तु पूर्वलक्षणसर्वविन्॥ हृदिमण्डलमध्यस्थं इत्थं तु बीजं चेतसा॥
तावत्तथा निस्पन्दस्य समगा समभवे गता॥ सितगर्भे प्रज्वाला सितसर्वज्ञ
रूपं॥ पद्मस्य स्वरूपस्य चन्द्रमण्डलमध्यगं॥ पद्मासनसमासीनं वज्रस
हालिचिन्तयेत्॥ यस्य हृदयमध्यस्थं तत्त्वविज्ञानभावयेत्॥ ह्रंकारं रूप
दक्षिणे तु चक्रवर्णस्य चिन्तयेत्॥ समनानिस्य हृदेश पद्मचिन्तकाः तु बुद्धि
मान्॥ समगाथा दनावाक्य पञ्चि कयज्ञि योगिनां॥ तस्याचानां सर्वेषां ग

क्षंनगस्यच्चिनायत॥ यदिष्टस्वरागस्य चित्तिगं ज्ञानलक्षणं॥ ज्ञानमथसर्वेस्तु
र्वथपनच्चिनाज्ञानयोगवत॥ सत्वार्थवीर्यमर्थानां श्रूयतामथच्छजयत॥ ॥
श्रुथा॥ अग्निकर्मस्य आत्मनकर्थयोगस्यज्ञापय॥ ज्ञानाग्निमात्मरावस्यर्थमा
हगितलक्षणं॥ ॥ अथ गतस्यगुर्णीनां सर्वज्ञानप्रतिष्ठिता॥ ज्ञानाग्नि
जन्तुदहनां सर्वं धिष्ठितचगता॥ तस्मात् योगिनां आत्मस्यचगमान्यक्षे
गिंधिनात्स्सुमध्यानां पार्श्वस्कमप्रमयतं॥ अग्नि कुण्डसलस्मानानारान्त्र
गगवस्थितं॥ ज्योतिगासर्ववर्णस्समध्यस्तुपमवत॥ सूर्यमण्डलमध्यस्कन्द
नदवीतधामयत॥ पच्चरमध्यिन्तुआत्मानां रूपमरक्षदर्शयत॥ आपगर्क
गियारूनां पृथिव्याज्ञानमचर्धा॥ आत्मपञ्चरगिदमानां आत्मस्याधिधिम
रूमां॥ अस्यादशरिवतान श्रूमगलक्षकालयं॥ गमाक्षावस्तुम ध्येयचलंध
कानसलीयता॥ अग्निमध्यरूताधास्वनादिपूर्ववीजक्षेथ॥ लावयमरिगत
न आत्मस्यान्यपौष्टिकं॥ यदिक्रिविशत कशपानां सूर्याकल्पनरक्षणं॥ अस्य
चगियोगीनां स्तयश्चापनविधयत॥ ॥ इतिश्रीपक्षनलतक्षपीठद्वि
तीयपटलसमाप्तं॥ ॥ श्रीगणेशाय नमः। देवसवीयोगलक्षण
समगाक्षनथाकाश्चमतिगमर्कथपमं॥ अथ कत्रमरान्तक्षरलाचनविश्व
प्रगं॥ समनात्विनचिहृन निर्वासकालिवर्जनं॥ आपसर्वप्रमाणस्यशरी
रश्रूकपात्स्या॥ नतुआपसदरानांप्रमाणआपदर्शकं॥ आपिसर्वस्वगस्य
प्रमाणा आपयद्धिमान॥ श्रीदवीगिदरानांप्रमाचगिसूच्छिमान॥ अग्निव
सर्वमङ्गस्यशरीरज्योतिगवस्कवत॥ अनुस्तु ः गाः प्रमाणानां नजीकी
र्तिप्रमाणर्क्षेथ॥ आपिसर्वत्रमङ्गस्यगजाचनसर्वविश॥ धारीयष्टिमद
हानांप्रमाणाकीर्तिगस्यचथ॥ वायुसर्वत्रदहानांस्थितिधवगमयउल्लिवत॥ प्र
मानास्वासचगस्यप्रमाणकीर्तिगायूधथ॥ सर्वेरिह्यगस्यवामस्यसमीवमा
गमाप्रितं॥ वनालीदवगीसर्वज्ञानमस्तुविमक्षथ॥ पृथिव्यासर्वमास्था

नरूपङ्कीतश्रहत्विगं॥ प्रमाणमात्र यालनं प्रथिमार्प पहश्वग॥ तस्मात
लेनसंयुक्तसत्वनीकीर्णिमासकेथ॥ वोजालीदवगीमानोपजुःसर्वरिकी
ह्निना॥ हर्गीकर्णीचयरुक्तत्र संसंयमनङ्गहका॥ छुट्टिमहर्य वगसतल
नङ्गायनथ॥ संयोगात्तुक्ता बाजेन्द्र विमयादिस्रवानिवा॥ ज्ञानबाजिगदह
सभ्रमाधाधागिनारूथ॥ विज्ञानं ज्ञापधातुश्च संरवा ताप चगता॥ यदि
साज्ञापमन्यथा स्थग साकिंनज्ञाप वम्॥ विज्ञानाङ्गपिरंगतगनीकत स्कग
ङ्कवं॥ गगङ्गानसहह सदस्त्रागर्दिनराससन॥ विज्ञानांसायहहकानाउस्वा
सग्रुष्ठमवर्ग॥ गगङ्गानसदेहस्यस्त्रनखा सानचगगथ॥ यथिम्यां चनलग
उदक्त्रखबनायर्ग॥ प्रमानापश्चरहतस्यपश्चरभक्तावराबनथ॥ वक्तलांक्त
गङ्गागम्ये धागीनांगगि थ्क्तथा॥ गगतङ्गाहज्ञानैकलाशमित्रथव
ना॥ संसारपारमकार्य थागगलासहायगा॥ थ्कुद्धि याविषयज्ञानसपी
थमानानिवधनं॥ वन्धयमध्यज्ञानन्तु ज्ञानजाग्रहमालथ॥ चालिनराव
वस्त्रनथलायचगना॥ ज्ञापनावन्धज्ञानस्य विज्ञानपमसासन॥ हन्तुन
सचथागीनां विज्ञानरूपलक्षणथ॥ रूपसंङ्गीगिरावसयासिद्धार्थहन्तुना
कदलीपुष्पाङ्कितानाहउङ्क्रिगजदयवाङ्किना॥ निकामखसदाङ्किलाज्ञा
वङ्कतुथिचक्तगथ॥ ग्रहपतसदालवाउक्ताक्तसनक्ताहवग॥ तसम्ध्येः
तुगदधाक्त ज्ञानविज्ञानयागगथ॥ संयोगापूर्वकालाव ज्ञयथमष्ठवि
गथ॥ गिणपश्चिमरागस्य पश्चरनिम्नन्तु मतली॥ तस्यक्तत्रसबीजानाञ्
क्त्राराबनाभिवग॥ तस्यवीजस्यनभीनाज्ञावर्गकदची पुष्पवग॥ पं
चहताहस्यवीजानांहननिम्नन्तु स्फालयग॥ स्फालनंपमकीर्तिन्तुदल
नस्थविलघिग॥ ग्रसपमानिमासीनज्ञानजाज्ञानमालयां॥ मध्येहृष्टके
माकारं ज्ञानविज्ञानमध्यनथ॥ चतुर्थाकिनिवीजस्य दलादिसहिल्लापनं
स्वनपूर्ववीजस्य यथालक्तगउङ्किगथ॥ सिंहीविदिसमादीनां नपूंसावी

क्षमात्मन४॥ हृदयस्थस्य शवनहृदयस्थ दृश्यमकृत्वं॥ गवाक्षांतु उर्द्ध्वनसूत्र
गंगवधावनाश४॥ क्षामपथनिस्त्यागीनासि गवर्गे द्विरूकनथ४॥ जातिलिंगः
छिद्रयामस्य सूक्ष्मगोहितगात्रेवज्ञ॥ ज्ञानविज्ञानवीजस्य जपसर्वस्य धा
गिनी॥ वज्रमेयाननिषयस्ययनसर्वयांगन४॥ जपरायस्यत्यागीनांसुस
माहितचगसा॥ ज्ञानाद्भवस्यायगस्यवनसंसारमकृत्वं॥ समाहितंरावरा
वनानिष्कमपागिरपक्षं॥ ॥शूरवक्त्रयथागस्य उत्क्रान्तिथागलक्षण
सुमार्गाहितयोगीनांगतिशागसदर्शयन्॥ श्रोतुमिच्छामिज्ञानन्दनवधा
यादिक्कीदृशं॥ ध्यानदृष्टमज्ञानस्यतन्दधाधास्किदृशं॥ धूतस्यमञ्जपाग
स्यप्रमाणात्यलिकालग४॥ सुमार्गतोरहनस्थानसमार्गरयवधायग४॥ वि
दूनारसत्युत्क्रान्तानां चक्रनासादिकस्थिथा४॥ पानावानसधानसनवधान
स्यवनंगं॥ नार्यकामिकस्ववर्गस्यविन्दूनांरूपदहिनां॥ उद्धव उर्द्ध्वंकस्थानः
सुगयागनपविज्ञावज्ञ॥ यज्ञारुवननासानांकर्णलंत्यासिद्धिद्वचा॥ चक्र
यदिगतज्ञानं नवाथान्तपवर्गेनं॥ एगधानसप्रमानांमूर्धानिर्यगम
गिलपथा॥ उत्क्षेनवन्दगवानांरूपानविदृशीघ्रग४॥ यगाधावावि(े
पलसंभावरदमूहव॥ तस्माद्धानविशेषस्यत्यागीनांतुविमज्ञा४॥
मस्तुकालस्यप्राणानांमस्तूनि नातुदर्शितं॥ नेतुरदजवादीनांउत्क्रा
णिथागमस्तंम॥ कृतदक्षपूर्वमावंरसर्वधानाहितहितं॥ पञ्चरत्नोटि
कम्स्यानांधावंररूढस्यगवनं॥ गणनिस्त्वसधानस्यवीजस्याहितमा
कृवन्॥ गस्यकमात्वलासस्यरावधसूसमाहितं॥ वायुवर्लस्यारदस्यवा
यमपुत्रलयगसा॥ वायुवीजस्यमूलानिवायुरूनास्यमूलका॥ विन्दुनादस्य
यकांनकर्षधयधगवीजक४॥ वह्नीवीजस्यधारानांगरुका॥ दिक्तुथाउत्थ
न॥ धावाकर्षितनरिलानेनकविंशतिस्थामयक४॥ पदज्ञानपदउर्द्धन
वसम्बितुउर्द्धन४॥ उल्लापतितवीजनसाधयेभक्तुरूकारं॥ धावनादन

अथाखलबीजगण ॥ नरगीद्यर्पपिकस्वर्द्वस्वजर्जमकानजाडितं ॥ प्र
थमनादनादनवायमंडलानिस्कमण४॥ षमाधंकसमंस्तत्र १ यम्मकालि
सनिर्मलं ॥ तथापकानिद्रा लानां ज्ञानकाय हिंस्वापितं ॥ उत्कान्तिकाल
संप्राप्तकलेवरत्यागनं ॥ तस्मोच्चिकानिद्रा लानां योगमानस्य बुद्धिमान् ॥ ॥
अस्य वज्रयपांगत्वं यागताधाविवेशपन ४॥ समगा चिद्रलावनपर्वलक्षण
सर्वनः४॥ हृदिमंडलमध्यस्थं पद्मवृक्षान्तर्बीजकं ४॥ तस्य ज्ञानलार्कलक्ष्मा
नात्रपांक्षयचनमः॥ पूर्वउक्तादिशमस्य पूर्वलक्षणस्यूपेषा॥ हृदयस्य र्व
रूपाधीहं क्कानस्थितं गच्छ नमेः४॥ बीजं नरूपनिष्पाद्य चन्द्रमंडलमध्यच॥
पद्मासनमासीनं ताङ्किनीमालनः४॥ शिरस्थब्रह्मरन्ध्रे वत्तिनयाज्ञीदि
मण्डितं॥ हस्तिनजाधपंगावसर्वावस्वशक्तिलक्षितं ॥ हसितं सितनक्रश्रेन्द्र वर्ण
स्मरक्षोलावस्त्रलक्षितं॥ हृदनंत्रमध्ये ध्वसलपर्यंकं वस्थितं॥ प्रथमं
सर्वविन्यासद्वितीयमग्रकं भगग्रहं ॥ तृतीय पनत्वज्जस्य वाम मर्जनिक्षाधका
द्वितीयपासविक्रीतासनाह धनूर्ध्वसः४॥ अभिज्ञालमनकाश्च लावथ अथा
मनिश्चलं॥ न्यसस्कन्नविन्यासं स्वराङ्गबीजं गलस्थं ॥ शूलिकालिस्थिता लो
नयथाउ धूम्रबीजवम्॥ सितवर्णादि सर्वेषां ज्ञात्वा संपूर्णबीजके ४॥
कदलीपुष्पस्य पंक्तस्तद्दिश ज्ञाजस्थापनं॥ तस्मुनश्रेष्ठज्ञानानां विशा
नसहितं मनसु॥ लावथलावलावन निष्कम्पानिरूपद्यत ॥ गगवाक्यादिया ग
सक्षस्यगविचक्षणः४॥ द्वित्रभुवनश्वगानानाबाहुमंडलसचनमः॥ नसमश्र
उस्रगीनां आलयाधकृत कायथम्॥ अलिकालिकृ यज्ञस्य बीजगस्येवमक्र
यम्॥ क्षणलाहानभजापस्मयागीनांउविचक्षणः४॥ ज्ञानबीजस्य दलानां हस्म
मानंतु मध्यमः४॥ लावद्धयज्ञानस्य हस्तमानं तु पूर्णयम्॥ दलक्षालनजापनं
हानालावशजापितं॥ दललावनस्ययोगीनां आलयाध्यक्ष कायथम्॥ दलाल
क्षणलक्षस्य हावलक्षणल क्षयम्॥ दलालहानस्य योगस्य समगानलावनं॥

स्मा॥रूपं सुवर्णवनस्मि धनात्रसंशय॥ नम॥ माभ॥ दिव्यज्ञानं साक्षात्स्तुतनि
र्मितं॥ मनिर्विकल्पनूचनसुज्ञामयनविकल्पक॥ द्रव्यक्रियापविगमाशास्तु सुमा:
रिमवनस्ला॥ चिनिगयस्य मार्गा निश्चित्य धनात्रसंशयप॥ ॥श्रीभगवन्
न॰श्यमसी॰मूर्तिमयप्न॰समापथ॥ ॥श्रोतुमिच्छामि ज्ञानन्तु:
शुक्ष्मापीगतुयक्षर्क॥ भिश्रिगंज्ञान चगतु संवाधिज्ञमकीशभा॥ तु क्षयक्षार्थ
धर्मस संवाधिज्ञमवद्यधर्म्म॥ सुमनावि स्मृताय यागा॥ दिव्यं च वर्जितं॥ सूत्व
मासनमासीनं मनानूतं तृप्यदशगथ॥ सुखविज्ञनधातूनां कार्य शारिगवग
मा॥ धूपं गन्धानि गन्धस्य आचार्यमागमेत्स्वया॥ वस्त्र गन्ध गन्ध सुमायां प
यंगगवगथ॥ पूर्वलक्षण सर्वमाहत्यगतानि लक्षणम्॥ कालेन स्थितिकस्य
क्तु संवाधिज्ञमवज्रपन्॥ स्वन्तुमण्डलमध्यस्थं ज्ञानजाकिनि चित्रितं॥ सिग
श्रीधुन्दवर्णगन्ध आत्मानम्भिन्नमृक्षितं॥ दितुजस्य पर्यङ्कं पद्मासनमा
खिनं॥ सर्वालक्षणमायन्तु पञ्चरश्चाजस्तु मण्डितं॥ मलाम्बरधराया नाथं दिस्ला
नक्तुमीडितं॥ तु पसं मूर्त्तिस्मारिगं च ज्ञानसत्वीमहं पठेत्॥ कदलीपुष्पसंनि
गाना स उत्ति गंधद्रव्य वसितं॥ पूर्वलक्षणवर्णस्य विष्टार्थं पूर्वपमवगु॥ द
लक्षणलक्षण स्थानिकसन्धानि सर्वाणि च॥ नमुस्कृतवविन्यासमण्डलमाश्रि
गं॥ सूवर्णे — शिनं दिव्यमध्ये वाड्वपूर्त॥ तत्र मध्ये तु विज्ञानं स्थानं गतस्व
शाजथम्॥ मैत्रीयूक्तस पूर्वेण त्रैकाशद्दलबीजोक्षेश॥ कस्तुआयाच दक्षिणस्थ
नलबा — निबीजवत्॥ दलपश्चिमबासस ऋमिगारुजाविन्यस्त॥ मया द
लविश — नांगमा घण्डुचवनसा॥ त्वन पूर्वादिबीजस्य दण्डुविन्यस्यथाक्रमं
मसंस्कृतायचलाच स्थितात्मा दिमण्डितं॥ विदिस्तनन्तु नलानन रसामूर्त्ति
क्लिश॥ मक्षगस्मेतु चमानां श्रृंगाचनच ॥श्रीतुकं चगमस्तन्नलगवन्
कथयमहं॥ श्रुत लक्षणस्य शम्भसत्कथयागाद्विमवस्त्॥ स्वगवानाथा॥ श्रुत वक्तु
यथानतत्वलकालक्षणस्य त्वका॥ श्रुकायतस्तुमायाया॥ श्रमतानन्दभावयन्॥

मध्यस्थानन्तुज्ञानस्य स्वरूपाज्ज्ञानरूपिणः॥ नतु लक्षणं तल्लक्षणं ज्ञानकायानिरंज
नः॥ रुवारवथितानिर्मुक्ता स्ववर्णवर्णस्वरूपिणः॥ स्वयम्भूस्तन्नाभमध्ये गन्धर्भं गस्व
योगिनः॥ तस्य लक्षणं ज्ञानन्तु स्वरूपं पतिमण्डलं॥ तस्यमध्ये तु बीजानां अलि
कालिकुमस्थनः॥ षिणवर्णस्वरूपो॥ हन्तुं ज्ञातानं मूर्च्छितं॥ तस्यमध्ये स्थाना
नां विन्दुरचना प्रकीर्तिता॥ वालाग्रशतधा भागेन परमाणुरूपचिन्तितं॥ लक्ष्ल
क्षणज्ञानीनां विज्ञानं स्वरूपलयनः॥ यस्य विन्दुपदस्थानं ज्ञानाच्च तल्लक्षणं॥
दृदिव्यमानकघनस्य विन्दुघनं च भागतः॥ अस्य विज्ञानज्ञानस्य व्यापदेश
गतं मः॥ नतु मार्गस्य बन्धानां साम्यशापि च स्वरूपनः॥ स्वरूपानि च भास्वराणि प्र
याणागतस्य लता॥ उपायन तु योगेन नान्यस्य संपन्न स्वयं॥ उपायपक्षेण मा
र्गेन दर्शयन विचक्षणः॥ समाहिता लावण्यावधानं निष्कम्प निरपद्गतं॥ मन
पूर्वंगमा धर्मामनोश्रेष्ठा मनोजवा॥ तस्मात्स नामरूपं सर्वं मनः॥ संभवं बुद्धि
मान्॥ यदिच्छेज्ज्ञेयस्य योगीनां हृदि चिन्तनमेव च॥ कारणं तत्र बीजस्य नतु म
त्वानिरूपनः॥ कार्यकारणबीजानां नतु गत्वा दिगन्तरेषु॥ रूपादि दिग्वर्णा
गस्य मार्गस्य संयोजापनं॥ वहनस्य सर्वस्य सर्वथा सिद्धिरिति विसर्जनं॥ निस्पन्दलानि
पीतस्य ज्ञानविज्ञानबीजनः॥ विन्दुनादन्तु संसारं रागकांक्षिनः॥ मनजाप
नसंयुक्तं अक्षरं वाक्यविवर्जितः॥ सूक्ष्मनिस्पन्दस्थानं सास्वनधर्मं हेतुकं॥
निस्पन्दस्थानि तन्तु ज्ञानविज्ञानलीयनं॥ ज्ञानविज्ञानतां वर्णिविज्ञानं स्वा
भ्रिजमहोत्तमं॥ प्रदीपाकारमसर्वेषां सप्तमं चित्तरूपलक्षणं॥ स्वभावाकारचक्षु
नां द्वितीयं चित्त लक्षणं॥ तिलपुष्पसमाकारं दशदिक्षु स्थापनं तथा॥ ज्ञानाध्य
मनूनीयानां योगीनां तु विलक्षणं॥ कामाधिदेवयोगीनां चतुर्लक्षणं दर्शि
तं॥ रूपस्वभावादिव्यानां पञ्चमं लक्षणं मतां॥ षष्ठं चात्र परमस्य सम्पन्न ध
र्मधातुकं॥ अष्टमनन्तु कुष्ठाच्छायाकृत्स्नं तद्वर्णं योगिना॥ ॥ अष्टत्र
जप्याग तत्त्वसम्यक्कं तु देशितं॥ सम्यक्ज्ञानं तत्त्वं जानीयात् योगमानस्य

त्कृतं॥ हृदयचन्द्रकान्तस्य संस्कारबीजमध्यगं॥ भूमिजालप्रकाशिस्थं सितसुख
वक्षाचितं॥ वायुमण्डलसर्वस्वं सर्वेशमूर्त्तिमालिनं सदितं॥ पूर्वलक्षणमार्गेन चन्द्रमण्डल
क्षान्तिसंभवमतं॥ सुषाणा—न्तर्बीजस्य संभवं छिन्नपक्षणं॥ गुरुसन्निधापयन्तं
स्य स्वरूपानां लिङ्गमालयं॥ श्रीनिवृत्तिलभिन्नाहृदिसिद्धसमध्यक्षं॥ घनमाका
समध्यलिङ्गमयामालयध्वनं॥ कामावसमनदत्तसहर्मिमाधुर्यवस्थनं॥
नेत्रास्यधर्ममध्यस्थं निम्नउर्द्धमसंज्ञय॥ रूपधाम्नि भिन्नवर्गानां कृत्यावलि
विलक्षितं॥ समादशरीररूपानां यथाजन्मयवाल्लिङ्गं॥ आरूपरूवसर्वांशा
धर्मैदक्षगिनीयगं॥ निष्पाम्लक्षुपरूपस्य सर्वध्वगमानयं॥ ऊर्द्ध शून्य
स्थानस्य आलम्बनं॥ चनज्ञाननमाभिसंसमनाद्ययरुदनं॥ रूपधन्यस्था
दिश्रक्तसत्तुवालावगत्शिवच॥ आज्ञयाक्रादिपायस्य रसनविपर्यागक॥
गरुमध्यगुणावस्पलक्षणंदशकं॥ पूजयदस्यलपानिदानशीला दि
क्षान्तिकं॥ रामयरावरावननिष्कम्पगिरूपज्ञं॥ समाहितालवचनस्य सि
ध्यमनाय संशय॥ धर्मध्यातुरवराधनगत्वशास्त्रादिश्रागमथायाग॥ ध्यानि
मालंघ्यमहासिद्धादिरहितं॥ चतुःपी॰ठगतस्य सत्यापदसमन्वितं॥ स
नेस्वस्थादिर्योगस्य नेवास्य शुक्लादिनां॥ श्रमनास्वादियोगीनां ज्ञानकाय
गिसीप्रमं॥ ॥ धर्मध्यातुयागगं॥ ॥ रुगवनलोभमिक्षामि
नरस्यआगलक्ष्यं॥ नत्वागलपवगलध्यनसंधाधिमार्गनं॥ रुगवानाह॥
शूदीनावयागीनां चिगलस्थारिकानयत्॥ तुरणोपमन्विज्ञानावध्यय
नविचक्षणं॥ यथेवरगावलिपृष्ठकालिका॥ मयालिमनाद्दशवननच
शालनविज्ञश्रीविमाहरेखिगा॥ नपारुवंधर्ममनस्य वधनं॥ मनावध
नसिद्धानां मनावध्वनपूर्वकं॥ मनसाध्यविशेषांज्ञानसंबाधिलक्षितं॥
चन्द्रमण्डलमध्यस्थं ज्ञानसंकिनीनिर्मितं॥ महामुद्रा हृदिचैव पूर्वलक्ष
णसर्वनं॥ अष्टाशक्तबीजानां न्यसमरुमनस्थानं॥ पञ्चरश्म्यादिकाल

पानां यद्बद्धाय॥ विविनिगं॥ अस्मगा कत्र मक्राली स्थितिध्यानसमुत्क्रिमं॥
क्रियाक्वचसततु यस्य मानापान सुगमृत्थं॥ कदलीपुष्पसपञ्चमं सावर्जं
स्वाक्सकालिमां॥ चलितं चलयद्दृष्टिः मावरुद्ध्य प्रविशेत्॥ गसमंध्य तु ऊ
ध्वनासिगपुरुन्हवस्थं गय॥ दिशादसं बीजधातु चलत्र यवि दिसमूर यपर
मध्ये च गत भावध्यसानर्यावत धात्वच्छ च गाचराचानां पश्चात् रूपादि शद्वन्
दिश्वादिसं च नि क्रिय विदिशि नतु ॥ सर्वं रूपादि शब्दस्य ज्ञानं वि
ज्ञानसंपतः॥ आपश्यं विदिसं यस्य सिगवर्ल्णं वचप्रच॥ अग्निमीमप्रलाङ्ग
सतङ्कं च गनि सुमतः॥ पश्चिमनासं यकानां पश्चिमका सत्त्वस्निनां॥ पृथिव्या
कृष्णस्वर्ण सप्ताङ्गिं पदिशे चगमा॥ विदिशमि श्रवर्णस्य चतुष्कालोपघ्याज
धनं॥ ज्ञानसंपस्य मध्यानां अनुजासहपद्मनं॥ गसतं कथतं भाम लक्षल
क्षत्रूयतः॥ गावत्सन्यादिग्वगानां रूपा गामच्छिन्नकाय॥ विद्धसपुन्यम
ध्येयमरुवायपमां भवत॥ अतिकालिबीजस्य संज्ञा पत्रिमाश्रमध्येय॥ अस
लंनतु मा कान जम स्नापि सर्वतः॥ नचतुर्नादि मालस्य नचरूपादिय भवतः
न तेजा न च बीजस्य न रूपं न चलत्कथं न वायुर्न चाकाशं समं मध्यमत
कथन्॥ रूपं तन्न मध्यामध्येनध्येन गंध्यायिना॥ यन्नापद शब्दागम्यं अप
संपर्वभयस्य॥ लङ्केशशास्त्र गूढतनु आगमसहस्रिं क्षिनि॥ सावधत्तावरा व
ननिष्कस्यामिरूपं तज्ञं॥ समाहितारावस्कानं संवाध्यकमस्ति ध्यानं॥ ज्ञान
ताहीतुपागीनां समर्थं क्रियापसनं॥ सकलसद्दस्वगानां यादि शुद्धप्राप्य नं:
कितु॥ ज्ञानं चक्षुरिन्द्रियरोगानां सिद्धिकाय चिह्नगथ॥ ओनामकिं लतं धापसू
नद्यश्रित्रिधातुक्षेथ॥ मनतच्छ आरिखापश्य अवक भय नद्द हिनां॥ पस अभि
कसत्वानां वत्र श्री बुद्धप्रत्यक्षगा॥ इहामिन्द्रियअर्थानां नैरात्म्यस्वरूपद्मानगतः
धर्मधातुस्वलावानां यागतस्था वमरूपं॥ यथा अन्यप्रयागस्य वृद्धत्वमा
हत्येननतु॥ आगमनतु यागीनां भवादि विजननतु॥ यनस्कभवसेतानां

गस्थानगतं - यत्नाय योगमावालकथानूमाहितं॥ सत्तापसंपर्कक्षभास्व
र्यापितुं॥ मार्गोपिरव्यानेनयनन्दन॥ नवंविक्षेप्योगकूमार्गदर्शिता॥ नागमू
लपत्ताभन्तुकष्ट लजन्दशगत॥ मागक्षेनपलमन्दसमरागेनचूर्लितं॥
गवोक्षीनमरक्कोनात्तूर्लकर्षितमिश्रितं॥ दिनदिनमिदं योगी लक्ष्ययत्नः
विघक्षय॥४॥ वर्षेशता नियोगीनां जन्मभलाधिवासता॥ नियमसूपश्रितीय क्र
रूपाणीगस्थक्षय॥४॥ श्रूस्तराघवस्थकालेजन्मभलाधिवासता॥ नियमसूपश्रि
तीयक्रूरूपाणिसमञ्जिमता॥ यभागशावालकथानूमाहितसत्तापसंपर्कक
भास्वरव्यापितुं॥ मर्त्योपिरव्यानेनचवन्धवनेन नवंविक्षेप्योगकूमार्गदर्शिता
॥ श्रूपसर्ववर्षयोगिनीनां श्रीसिद्धिकाघाचवाधिसत्वसंघमनेकसत्वीति
प्रज्ञादत्तविरूतुष्टानलालीतुसर्वसत्व॥ वज्रपाणिप्रमुखानांवोधिसत्वानां क्ष
गाजतिमत्रयमपयता॥ ॥नमह श्रूक्कावनशनूस्त॥ व्रवितनुतगा
नू॥ भनाहूं भनाहूं भनाभभहूं २॥ धवलससाङ्कदलधरू॥ सचदलूमाहु
ङ्चन्द्रमहू॥ भनाहूं भनाहूं भनाभभहूं २॥ घंघालिंगनयोगधरागन्क
वज्रमूद्दवरू॥ भनाहूं भनाहूं भनाभभहूं २॥ मायाविदलीनजयं॥ सो
विश्रूकानशपूरू॥ भनाहूं भनाहूं भनाभभहूं २॥ ङ्भिमंगलार्थनिपूनस्त
गयभसर्वसार्थेन॥ श्रवज्रयभामार्गशास्त्राणांसूसमाहितं॥ श्रूक्तनूप
दमातंवाण्ल श्रोभियस्यगस्यच॥ स्वर्गगगमवाश्नागि श्रूभवायक्रवलित
लिखनाद्यपिवाचक्कमन्त्रजापसूत्रवदान्॥ श्रूरपरवचक्रसत्पूमिक्काल
लिदहितं॥ योगध्यानक्रियानात्तुसर्वाधिक्रमश्रीग्रत॥४॥ दमवाचहग
वानाक्रमनाभचसर्वदशदिग्योगयोगिनीयनिपगितोभनप्रवक्ष्यपाधि
प्रमुखावोधिसत्वामहासत्वासर्वचदवनागयक्षारूवगरतोक्तनपमसो
यगा॥४॥ सर्वावनीपर्षरूगवेणारा विगमस्यनन्दन्तिति॥ ॥आर्यदशे
सारुश्रिकंमन्त्रसहस्रहादशभगवस्य श्रीपतु॥४॥पी॥ महागंतराजन्द्रसमाप्तः

IASWR

MICROFILM PROJECT MBB

CONTENTS


| | | | |
|---|---|---|---|
| Chapter | 1 | Ātmapītha Prathama patala | 6 A.8 |
| ,, | 2 | Dvitīya patala | 10 A15 |
| ,, | 3 | Śūnyatā yoga | 11 A.13 |
| ,, | 4 | Ātma pītha | 13 A9 |
| ,, | 5 | Para pītha Prathama patala | 17 A6 |
| ,, | 6 | ,, Dvitīya patala | 18 A12 |
| ,, | 7 | ,, Tritīya patala | 25 A18 |
| ,, | 8 | Parapīth samāpta | 31 A10 |
| ,, | 9 | Yogapītha Prathama | 34 A.19 |
| ,, | 10 | ,, Dvitīya | 38 A1 |
| ,, | 11 | ,, Tṛtīya | 41 A7 |
| ,, | 12 | Yogapītha samāpta | 47 A15 |
| ,, | 13 | Guhyapītha Prathama | 50 A14 |
| ,, | 14 | ,, Dvitīya | 54 A13 |
| ,, | 15 | ,, Tṛtīya | 58 A4 |
| ,, | 16 | Samāptam | 62 A23 |